اَمَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَ
اَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَاَنْۢبَتْنَا
بِهٖ حَدَآئِقَ ذَاتَ بَهْجَةٍ ۚ مَا كَانَ
لَكُمْ اَنْ تُنْۢبِتُوْا شَجَرَهَا ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ
اللّٰهِ ؕ بَلْ هُمْ قَوْمٌ يَّعْدِلُوْنَ ﴿٦٠﴾

60. बल्कि वोह कौन है जिसने आस्मानों और ज़मीन को पैदा फ़रमाया और तुम्हारे लिए आस्मानी फ़िज़ा से पानी उतारा फिर हमने उस (पानी) से ताज़ा और ख़ुशनुमा बाग़ात उगाए तुम्हारे लिए मुमकिन न था कि तुम उन (बाग़ात) के दरख़्त उगा सक्ते। क्या अल्लाह के साथ कोई (और भी) मा'बूद है ? बल्कि येह वोह लोग हैं जो (राहे हक़ से) परे हट रहे हैं।

اَمَّنْ جَعَلَ الْاَرْضَ قَرَارًا وَّ جَعَلَ
خِلٰلَهَاۤ اَنْهٰرًا وَّ جَعَلَ لَهَا رَوَاسِيَ وَ
جَعَلَ بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا ؕ ءَاِلٰهٌ
مَّعَ اللّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٦١﴾

61. बल्कि वोह कौन है जिसने ज़मीन को क़रारगाह बनाया और उसके दरमियान नेहरें बनाईं और उसके लिए भारी पहाड़ बनाए। और (खारी और शीरीं) दो समन्दरों के दरमियान आड़ बनाई। क्या अल्लाह के साथ कोई (और भी) मा'बूद है ? बल्कि उन (कुफ़्फ़ार) में से अक्सर लोग बे इल्म हैं।

اَمَّنْ يُّجِيْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَاهُ
وَيَكْشِفُ السُّوْٓءَ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَآءَ
الْاَرْضِ ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ قَلِيْلًا
مَّا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٦٢﴾

62. बल्कि वोह कौन है जो बे क़रार शख़्स की दुआ क़ुबूल फ़रमाता है जब वोह उसे पुकारे और तक्लीफ़ दूर फ़रमाता है और तुम्हें ज़मीनमें (पहले लोगों का) वारिसो जा नशीन बनाता है। क्या अल्लाह के साथ कोई (और भी) मा'बूद है? तुम लोग बहुत ही कम नसीहत क़ुबूल करते हो।

اَمَّنْ يَّهْدِيْكُمْ فِيْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَ
الْبَحْرِ وَ مَنْ يُّرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًۢا
بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ
اللّٰهِ ؕ تَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٦٣﴾

63. बल्कि वोह कौन है जो तुम्हें ख़ुश्को तर (या'नी ज़मीन और समन्दर) की तारीकियों में रास्ता दिखाता है और जो हवाओं को अपनी (बाराने) रहमत से पहले ख़ुशख़बरी बना कर भेजता है। क्या अल्लाह के साथ कोई (और भी) मा'बूद है ? अल्लाह उन (मा'बूदाने बातिला) से बर तर है जिन्हें वोह शरीक ठेहराते हैं।

اَمَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ
وَ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَ
الْاَرْضِ ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ قُلْ هَاتُوْا

64. बल्कि वोह कौन है जो मख़्लूक को पेहली बार पैदा फ़रमाता है फिर उसी (अमले तख़्लीक़) को दोहराएगा और जो तुम्हें आस्मानो ज़मीन से रिज़्क़ अता फ़रमाता है क्या अल्लाह के साथ कोई (और भी) मा'बूद है? फ़रमा

بُرْهَانَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٦٤﴾

दीजिए : (ऐ मुशरिको !) अपनी दलील पेश करो अगर तुम सच्चे हो।

قُلْ لَّا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ الْغَيْبَ اِلَّا اللّٰهُ ؕ وَ مَا يَشْعُرُوْنَ اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ ﴿٦٥﴾

65. फ़रमा दीजिए कि जो लोग आस्मानों और ज़मीन में हैं (अज़ ख़ुद) ग़ैबका इल्म नहीं रखते सिवाए अल्लाह के (वोह आ़लिम बिज़्ज़ात है) और न ही वोह येह ख़बर रखते हैं कि वोह (दोबारा ज़िन्दा कर के) कब उठाए जाएंगे।

بَلِ ادّٰرَكَ عِلْمُهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ ۫ بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْهَا ۫ بَلْ هُمْ مِّنْهَا عَمُوْنَ ﴿٦٦﴾ ع ٥ ٨ ١

66. बल्कि आख़िरत के बारे में उनका इल्म (अपनी) इन्तिहा को पहुंच कर मुन्क़ता' हो गया मगर वोह उससे मुतअ़ल्लिक़ महज़ शक में ही (मुब्तिला) हैं बल्कि वोह उस (के इल्मे क़तई) से अँधे हैं।

وَ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا تُرٰبًا وَّ اٰبَآؤُنَآ اَئِنَّا لَمُخْرَجُوْنَ ﴿٦٧﴾

67. और काफ़िर लोग केहते हैं : क्या जब हम और हमारे बापदादा (मर कर) मिट्टी हो जाएंगे तो क्या हम (फिर ज़िन्दा कर के क़ब्रों में से) निकाले जाएंगे।

لَقَدْ وُعِدْنَا هٰذَا نَحْنُ وَ اٰبَآؤُنَا مِنْ قَبْلُ ۙ اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٦٨﴾

68. दर ह़क़ीक़त उसका वा'दा हमसे (भी) किया गया और उससे पहले हमारे बापदादा से (भी) येह अगले लोगों के मन घड़त अफ़्सानों के सिवा कुछ नहीं।

قُلْ سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٦٩﴾

69. फ़रमा दीजिए : तुम ज़मीन में सैरो सियाह़त करो फिर देखो मुजरिमोंका अंजाम कैसा हुआ।

وَ لَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَ لَا تَكُنْ فِيْ ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُوْنَ ﴿٧٠﴾

70. और (ऐ ह़बीबे मुकर्रम !) आप उन (की बातों) पर ग़मज़दा न हुआ करें और न इस मक्रो फरैब के बाइ़स जो वोह कर रहे हैं तंगदिली में (मुब्तिला) हों।

وَ يَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٧١﴾

71. और वोह केहते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो (बताओ) येह (अ़ज़ाबे आख़िरत का) वा'दा कब पूरा होगा?

قُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ رَدِفَ لَكُمْ بَعْضُ الَّذِيْ تَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿٧٢﴾

72. फ़रमा दीजिए : कुछ बईद नहीं कि इस (अ़ज़ाब) का कुछ ह़िस्सा तुम्हारे नज़दीक ही आ पहुंचा हो जिसे तुम बहुत जल्द तलब कर रहे हो।

وَ اِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٧٣﴾

73. और बेशक आपका रब लोगों पर फ़ज़्ल (फ़रमाने) वाला है लेकिन उनमें से अक्सर लोग शुक्र नहीं करते।

وَ اِنَّ رَبَّكَ لَيَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُوْرُهُمْ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ﴿٧٤﴾

74. और बेशक आपका रब उन (बातों) को ज़रूर जानता है जो उनके सीने (अंदर) छुपाए हुए हैं और (उन बातों को भी) जो येह आश्कार करते हैं।

وَ مَا مِنْ غَآئِبَةٍ فِي السَّمَآءِ وَ الْاَرْضِ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ﴿٧٥﴾

75. और आस्मान और ज़मीन में कोई (भी) पोशीदा चीज़ नहीं है मगर (वोह) रौशन किताब (लौहे़ महफ़ूज़) में (दर्ज) है।

اِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ يَقُصُّ عَلٰى بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اَكْثَرَ الَّذِيْ هُمْ فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿٧٦﴾

76. बेशक येह क़ुरआन बनी इसराईल के सामने वोह बेश्तर चीज़ें बयान करता है जिन में वोह इख़्तिलाफ़ करते हैं।

وَ اِنَّهٗ لَهُدًى وَّ رَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٧٧﴾

77. और बेशक येह हिदायत है और मोमिनों के लिए रह़मत है।

اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ بِحُكْمِهٖ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْعَلِيْمُ ﴿٧٨﴾

78. और बेशक आपका रब इन (मोमिनों और काफ़िरों) के दरमियान अपने हुक्मे (अ़द्ल) से फ़ैसला फ़रमाएगा और वोह ग़ालिब है बहुत जाननेवाला है।

فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّكَ عَلَى الْحَقِّ الْمُبِيْنِ ﴿٧٩﴾

79. पस अल्लाह पर भरोसा करें बेशक आप सरीह़ ह़क़ पर (क़ाइम और फ़ाइज़) हैं।

اِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتٰى وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَآءَ اِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِيْنَ ﴿٨٠﴾

80. बेशक आप न (तो ह़यात ईमानीसे महरूम) मुर्दों को ★(ह़क़ की बात) सुना सक्ते हैं और न ही (ऐसे) बेहरों को (हिदायत की) पुकार सुना सक्ते हैं जबकि वोह (ग़ल्बए कुफ़्र के बाइ़स हिदायत से) पीठ फेर कर (क़ुबूले ह़क़से) रू गर्दां हो रहे हों।

★ यहां पर अल मौता (मुर्दों) और अस्सुम-म (बेहरों) से मुराद काफ़िर हैं। सहाबा व ताबिईन ﷺ से भी येही मा'ना मरवी है। मुख़्तलिफ़ तफ़ासीर से ह़वाले मुलाहिज़ा हों : तफ़्सीरुत्तिबरी (12:20), तफ़्सीरुल क़ुरतबी (232:13), तफ़्सीरुल बग़वी (428:3), ज़ादुल मसीर लिइब्निल जौज़ी (189:6), तफ़्सीर इब्ने कसीर (439:, 375:3), तफ़्सीरुल लिबाब लि अबी ह़फ़्स अल हम्बली (126:16), अद्दुर्रुल मनसूर लिस्सुयूती (376:6), और फत्हुल क़दीर लिश्शौकानी (150:4)

وَمَآ اَنْتَ بِهٰدِى الْعُمْىِ عَنْ ضَلٰلَتِهِمْ ؕ اِنْ تُسْمِعُ اِلَّا مَنْ يُّؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿٨١﴾

81. और न ही आप (दिल के) अँधों को उनकी गुमराही से (बचा कर) हिदायत देनेवाले हैं, आप तो (फ़िल हक़ीक़त) उन्ही को सुनाते हैं जो (आपकी दा'वत क़ुबूल कर के) हमारी आयतों पर ईमान ले आते हैं सो वोही लोग मुसलमान हैं (और वोही ज़िन्दा केहलाने के हक़दार हैं)।

وَاِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ اَخْرَجْنَا لَهُمْ دَآبَّةً مِّنَ الْاَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ ۙ اَنَّ النَّاسَ كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا لَا يُوْقِنُوْنَ ﴿٨٢﴾ ع ١٦ ٢

82. और जब उन पर (अ़ज़ाब का) फ़रमान पूरा होने का वक़्त आ जाएगा तो हम उनके लिए ज़मीन से एक जानवर निकालेंगे जो उनसे गुफ़्तगू करेगा क्यों कि लोग हमारी निशानियों पर यक़ीन नहीं करते थे।

وَيَوْمَ نَحْشُرُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ فَوْجًا مِّمَّنْ يُّكَذِّبُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ﴿٨٣﴾

83. और जिस दिन हर उम्मत में से उन लोगों का (एक एक) गिरोह जमा' करेंगे जो हमारी आयतों को झुटलाते थे सो वोह (इकठ्ठा चलने के लिए आगे की तरफ़ से) रोके जाएंगे।

حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْ قَالَ اَكَذَّبْتُمْ بِاٰيٰتِىْ وَلَمْ تُحِيْطُوْا بِهَا عِلْمًا اَمَّا ذَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٨٤﴾

84. यहां तक कि जब वोह सब (मुक़ामे हिसाब पर) आ पहुंचेंगे तो इर्शाद होगा क्या तुम (बिग़ैर ग़ौरो फ़िक्र के) मेरी आयतों को झुटलाते थे ह़ालांकि तुम (अपने नाक़िस) इ़ल्मसे उन्हें कामिलन जान भी नहीं सके थे या (तुम ख़ुद ही बताओ) इसके अ़लावा और क्या (सबब) था जो तुम (ह़क़की तक्ज़ीब) किया करते थे।

وَوَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ بِمَا ظَلَمُوْا فَهُمْ لَا يَنْطِقُوْنَ ﴿٨٥﴾

85. और उन पर (हमारा) वा'दा पूरा हो चुका इस वजह से कि वोह ज़ुल्म करते रहे सो वोह (जवाब में) कुछ बोल न सकेंगे।

اَلَمْ يَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا الَّيْلَ لِيَسْكُنُوْا فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٨٦﴾

86. क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने रात बनाई ताकि वोह उसमें आराम कर सकें और दिन को (उमूरे ह़यात की निगरानी के लिए) रौशन (या'नी अश्या को दिखाने और सुझानेवाला) बनाया। बेशक इसमें उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो ईमान रखते हैं।

وَيَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ فَفَزِعَ مَنْ فِي
السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ
شَآءَ اللّٰهُ ؕ وَكُلٌّ اَتَوْهُ دٰخِرِيْنَ ﴿۸۷﴾

87. और जिस दिन सूर फूंका जाएगा तो वोह (सब लोग) घबरा जाएंगे जो आस्मानों में हैं और जो ज़मीन में हैं मगर जिन्हें अल्लाह चाहेगा (नहीं घबराएंगे), और सब उसकी बारगाहमें आजिज़ी करते हुए हाज़िर होंगे।

وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَامِدَةً وَّ
هِيَ تَمُرُّ مَرَّ السَّحَابِ ؕ صُنْعَ اللّٰهِ
الَّذِيْٓ اَتْقَنَ كُلَّ شَيْءٍ ؕ اِنَّهٗ
خَبِيْرٌۢ بِمَا تَفْعَلُوْنَ ﴿۸۸﴾

88. और (ऐ इन्सान !) तू पहाड़ों को देखेगा तो ख़याल करेगा कि जमे हुए हैं हालांकि वोह बादल के उड़नेकी तरह उड़ रहे होंगे। (येह)अल्लाहकी कारीगरी है जिसने हर चीज़को (हिक्मतो तदबीर के साथ) मज़बूतो मुस्तहकम बना रखा है। बेशक वोह उन सब (कामों) से ख़बरदार है जो तुम करते हो।

مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ
وَهُمْ مِّنْ فَزَعٍ يَّوْمَئِذٍ اٰمِنُوْنَ ﴿۸۹﴾

89. जो शख़्स (उस दिन) नेकी ले कर आएगा उसके लिए उससे बेहतर (जज़ा) होगी और वोह लोग उस दिन घबराहट से महफ़ूज़ो मामून होंगे।

وَ مَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكُبَّتْ
وُجُوْهُهُمْ فِي النَّارِ ؕ هَلْ تُجْزَوْنَ
اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۹۰﴾

90. और जो शख़्स बुराई ले कर आएगा तो उनके मुंह (दोज़ख़ की) आग में ऊंधे डाले जाएंगे। बस तुम्हें वोही बदला दिया जाऐगा जो तुम किया करते थे।

اِنَّمَآ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ رَبَّ هٰذِهِ
الْبَلْدَةِ الَّذِيْ حَرَّمَهَا وَ لَهٗ كُلُّ
شَيْءٍ ۫ وَّ اُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ
الْمُسْلِمِيْنَ ﴿۹۱﴾

91. (आप उनसे फ़रमा दीजिए कि) मुझे तो येही हुक्म दिया गया है कि इस शहरे (मक्का) के रबकी इबादत करूं जिसने उसे इज़्ज़तो हुरमतवाला बनाया है और हर चीज़ उसीकी (मिल्क) है और मुझे (येह) हुक्म (भी) दिया गया है कि मैं (अल्लाह के) फ़रमांबरदारों में रहूं।

وَاَنْ اَتْلُوَا الْقُرْاٰنَ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى
فَاِنَّمَا يَهْتَدِيْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ
فَقُلْ اِنَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ ﴿۹۲﴾

92. नीज़ येह कि मैं कुरआन पढ़ कर सुनाता रहूं सो जिस शख़्सने हिदायत कुबूल की तो उसने अपने फ़ाइदे के लिए राहे रास्त इख़्तियार की और जो बेहका रहा तो आप फ़रमा दें कि मैं तो सिर्फ़ डर सुनानेवालों में से हूं।

وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ سَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ فَتَعْرِفُوْنَهَا ؕ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٣﴾

93. और आप फ़रमा दीजिए कि तमाम ता'रीफें अल्लाह ही के लिए हैं वोह अ़नक़रीब तुम्हें अपनी निशानियां दिखा देगा सो तुम उन्हें पहेचान लोगे, और आपका रब उन कामों से बेख़बर नहीं जो तुम अंजाम देते हो।

आयातुहा 88	28 सूरतुल क़-ससि मक्किय्यतुन 49	रुकूआ़तुहा 9

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नामसे शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है।

طٰسٓمّٓ ﴿١﴾

1. ता सीम मीम। (ह़क़ीक़ी मा'ना अल्लाह और रसूल ﷺ ही बेहतर जानते हैं)।

تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿٢﴾

2. येह रौशन किताब की आयतें हैं।

نَتْلُوْا عَلَيْكَ مِنْ نَّبَاِ مُوْسٰى وَ فِرْعَوْنَ بِالْحَقِّ لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٣﴾

3. (ऐ ह़बीबे मुकर्रम !) हम आप पर मूसा (عليه السلام) और फ़िरऔ़नकी ह़क़ीक़त पर मब्नी ह़ालमें से उन लोगों के लिए कुछ पढ़ कर सुनाते हैं जो ईमान रखते हैं।

اِنَّ فِرْعَوْنَ عَلَا فِى الْاَرْضِ وَ جَعَلَ اَهْلَهَا شِيَعًا يَّسْتَضْعِفُ طَآئِفَةً مِّنْهُمْ يُذَبِّحُ اَبْنَآءَهُمْ وَيَسْتَحْيٖ نِسَآءَهُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ مِنَ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٤﴾

4. बेशक फ़िरऔ़न ज़मीनमें सरकशो मुतकब्बिर (या'नी आमिरे मुत्लक़) हो गया था और उसने अपने (मुल्क के) बाशिन्दों को (मुख़्तलिफ़) फ़िरक़ों (और गिरोहों) में बांट दिया था उसने उनमें से एक गिरोह (या'नी बनी इसराईल के अ़वाम) को कमज़ोर कर दिया था कि उनके लड़कों को (उनके मुस्तक़बिल की ताक़त कुचलने के लिए) ज़ब्ह कर डालता और उनकी औरतों को ज़िन्दा छोड़ देता (ताकि मर्दों के बिग़ैर उनकी ता'दाद बढ़े और उनमें अख़्लाक़ी बे राह रवी का इज़ाफ़ा हो), बेशक वोह फ़साद अंगेज़ लोगों में से था।

وَنُرِيْدُ اَنْ نَّمُنَّ عَلَى الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا فِى الْاَرْضِ وَنَجْعَلَهُمْ

5. और हम चाहते थे कि हम ऐसे लोगों पर एह़सान करें जो ज़मीनमें (ह़ुक़ूक़ और आज़ादी से मेह़रूमी और

أَئِمَّةً وَّنَجْعَلَهُمُ الْوٰرِثِيْنَ ۙ ۝٥

जुल्मो इस्तेहूसाल के बाइस) कमज़ोर कर दिए गए थे और उन्हें (मज़लूम क़ौम के) रहबरो पेशवा बना दें और उन्हें (मुल्की तख़्त का) वारिस बना दें।

وَنُمَكِّنَ لَهُمْ فِي الْأَرْضِ وَنُرِيَ
فِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ وَجُنُوْدَهُمَا مِنْهُمْ
مَّا كَانُوْا يَحْذَرُوْنَ ۝٦

6. और हम उन्हें मुल्क में हुकूमतो इक्तिदार बख़्शें और फ़िरऔन और हामान और उन दोनों की फ़ौजों को वोह (इन्क़िलाब) दिखा दें जिस से वोह डरा करते थे।

وَأَوْحَيْنَآ إِلٰٓى أُمِّ مُوْسٰٓى أَنْ
أَرْضِعِيْهِ ۚ فَإِذَا خِفْتِ عَلَيْهِ
فَأَلْقِيْهِ فِي الْيَمِّ وَلَا تَخَافِيْ
وَلَا تَحْزَنِيْ ۚ إِنَّا رَآدُّوْهُ إِلَيْكِ
وَجَاعِلُوْهُ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝٧

7. और हमने मूसा (عليه السلام) की वालिदा के दिलमें येह बात डाली कि तुम उन्हें दूध पिलाती रहो फिर जब तुम्हें उन पर (क़त्ल कर दिए जाने का) अंदेशा हो जाए तो उन्हें दरिया में डाल देना और न तुम (इस सूरते हाल से) ख़ौफ़ ज़दा होना और न रंजीदा होना बेशक हम उन्हें तुम्हारी तरफ़ वापस लौटानेवाले हैं और उन्हें रसूलों में (शामिल) करनेवाले हैं।

فَالْتَقَطَهٗٓ اٰلُ فِرْعَوْنَ لِيَكُوْنَ لَهُمْ
عَدُوًّا وَّحَزَنًا ۗ إِنَّ فِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ
وَجُنُوْدَهُمَا كَانُوْا خٰطِئِيْنَ ۝٨

8. फिर फिरऔन के घरवालोंने उन्हें (दरियासे) उठा लिया ताकि वोह (मशिय्यते इलाही से) उनके लिए दुश्मन और (बाइसे) गम साबित हों। बेशक फ़िरऔन और हामान और उन दोनों की फ़ौजें सब ख़ताकार थे।

وَقَالَتِ امْرَأَتُ فِرْعَوْنَ قُرَّتُ
عَيْنٍ لِّيْ وَلَكَ ۗ لَا تَقْتُلُوْهُ ۖ عَسٰٓى
أَنْ يَّنْفَعَنَآ أَوْ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا وَّهُمْ
لَا يَشْعُرُوْنَ ۝٩

9. और फ़िरऔनकी बीवी ने (मूसा عليه السلام को देख कर) कहा कि (येह बच्चा) मेरी और तेरी आँख के लिए ठंडक है। इसे क़त्ल न करो शायद येह हमें फ़ाइदा पहुंचाए या हम इसको बेटा बनालें और वोह (इस तज्वीज़ के अंजाम से) बे ख़बर थे।

وَأَصْبَحَ فُؤَادُ أُمِّ مُوْسٰى فٰرِغًا ۗ
إِنْ كَادَتْ لَتُبْدِيْ بِهٖ لَوْلَآ

10. और मूसा (عليه السلام) की वालिदा का दिल (सब्रसे) ख़ाली हो गया, क़रीब था कि वोह (अपनी बे क़रारी के बाइस) इस राज़को ज़ाहिर कर देते अगर हम उनके

اَنْ رَّبَطْنَا عَلٰى قَلْبِهَا لِتَكُوْنَ مِنَ
الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠﴾
وَقَالَتْ لِاُخْتِهٖ قُصِّيْهِ ۚ فَبَصُرَتْ بِهٖ
عَنْ جُنُبٍ وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿١١﴾
وَحَرَّمْنَا عَلَيْهِ الْمَرَاضِعَ مِنْ قَبْلُ
فَقَالَتْ هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰٓى اَهْلِ بَيْتٍ
يَّكْفُلُوْنَهٗ لَكُمْ وَهُمْ لَهٗ نٰصِحُوْنَ ﴿١٢﴾
فَرَدَدْنٰهُ اِلٰٓى اُمِّهٖ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا
تَحْزَنَ وَلِتَعْلَمَ اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ
وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٣﴾ ع ١٣
وَلَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗ وَاسْتَوٰٓى اٰتَيْنٰهُ
حُكْمًا وَّعِلْمًا ۭ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي
الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٤﴾
وَدَخَلَ الْمَدِيْنَةَ عَلٰي حِيْنِ غَفْلَةٍ
مِّنْ اَهْلِهَا فَوَجَدَ فِيْهَا رَجُلَيْنِ
يَقْتَتِلٰنِ ۚ هٰذَا مِنْ شِيْعَتِهٖ وَ
هٰذَا مِنْ عَدُوِّهٖ ۚ فَاسْتَغَاثَهُ الَّذِيْ
مِنْ شِيْعَتِهٖ عَلَى الَّذِيْ مِنْ عَدُوِّهٖ ۙ
فَوَكَزَهٗ مُوْسٰى فَقَضٰى عَلَيْهِ ۡ قَالَ

दिल पर सब्रो सुकून की क़ुव्वत न उतारते ताकि वोह (वा'दए इलाही पर) यक़ीन रखनेवालों में से रहें।

11. और (मूसा ﷺ की वालिदा ने) उनकी बहन से कहा कि (उनका ह़ाल मा'लूम करने के लिए) उनके पीछे जाओ सो वोह उन्हें दूर से देखती रही और वोह लोग (बिल्कुल) बेख़बर थे।

12. और हमने पहले ही से मूसा (ﷺ) पर दाइयोंका दूध ह़राम कर दिया था सो (मूसा ﷺ की बहन ने) कहा: क्या मैं तुम्हें ऐसे घरवालों की निशान दही करूं जो तुम्हारे लिए इस (बच्चे) की परवरिश कर दें और वोह इसके ख़ैर ख़्वाह (भी) हों।

13. पस हमने मूसा (ﷺ) को (यूं) उनकी वालिदा के पास लौटा दिया ताकि उनकी आँख ठंडी रहे और वोह रंजीदा न हों और ताकि वोह (यक़ीनसे) जान लें कि अल्लाह का वा'दा सच्चा है लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।

14. और जब मूसा (ﷺ) अपनी जवानी को पहुंच गए और (सिन्ने) ए'तिदाल पर आ गए तो हमने उन्हें हुक्मे (नुबुव्वत) और इल्मो दानिश से नवाज़ा, और हम नेकूकारों को इसी तरह सिला दिया करते हैं।

15. और मूसा (ﷺ) शेहरे (मिस्र) में दाख़िल हूए इस ह़ालमें कि शहर के बाशिन्दे (नींद में) ग़ाफ़िल पड़े थे। तो उन्होंने उसमें दो मर्दोंको बाहम लड़ते हुए पाया येह (एक) तो उनके (अपने) गिरोह (बनी इसराईल) में से था और येह (दूसरा) उनके दुश्मनों (क़ौमे फ़िरऔ़न) में से था पस उस शख़्स ने जो उन्ही केगिरोह में से था आप से उस शख़्स के ख़िलाफ़ मदद तलब की जो आपके दुश्मनों में से था पस मूसा (ﷺ) ने उसे मुक्का मारा तो उसका काम तमाम

هٰذَا مِنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ عَدُوٌّ
مُّضِلٌّ مُّبِيْنٌ ﴿۱۵﴾

कर दिया (फिर) फ़रमाने लगे येह शैतानका काम है (जो मुझ से सरज़द हुवा है), बेशक वोह सरीह़ बेहकानेवाला दुश्मन है।

قَالَ رَبِّ اِنِّيْ ظَلَمْتُ نَفْسِيْ
فَاغْفِرْ لِيْ فَغَفَرَ لَهٗ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ
الرَّحِيْمُ ﴿۱۶﴾

16. (मूसा ﷺ) अ़र्ज़ करने लगे : ऐ मेरे रब ! बेशक मैंने अपनी जान पर ज़ुल्म किया सो तू मुझे मुआ़फ़ फ़रमा दे पस उसने उन्हें मुआ़फ़ फ़रमा दिया, बेशक वोह बड़ा ही बख़्शनेवाला निहायत महरबान है।

قَالَ رَبِّ بِمَآ اَنْعَمْتَ عَلَيَّ فَلَنْ
اَكُوْنَ ظَهِيْرًا لِّلْمُجْرِمِيْنَ ﴿۱۷﴾

17. (मज़ीद) अ़र्ज़ करने लगे : ऐ मेरे रब ! इस सबबसे के तूने मुझ पर (अपनी मग़फ़िरत के ज़रीए) एह़सान फ़रमाया है अब मैं हरगिज़ मुजरिमों का मददगार नहीं बनूंगा।

فَاَصْبَحَ فِي الْمَدِيْنَةِ خَآئِفًا
يَّتَرَقَّبُ فَاِذَا الَّذِي اسْتَنْصَرَهٗ
بِالْاَمْسِ يَسْتَصْرِخُهٗ ؕ قَالَ لَهٗ
مُوْسٰٓى اِنَّكَ لَغَوِيٌّ مُّبِيْنٌ ﴿۱۸﴾

18. पस मूसा (ﷺ) ने इस शहर में डरते हुए सुब्ह़ की इस इन्तिज़ार में (कि अब क्या होगा?) तो दफ़अ़तन वोही शख़्स जिसने आपसे गुज़िश्ता रोज़ मदद तलब की थी आपको (दोबारा) इमदाद के लिए पुकार रहा है तो मूसा (ﷺ) ने उससे कहा : बेशक तू सरीह़ गुमराह है।

فَلَمَّآ اَنْ اَرَادَ اَنْ يَّبْطِشَ
بِالَّذِيْ هُوَ عَدُوٌّ لَّهُمَا ۙ قَالَ يٰمُوْسٰٓى
اَتُرِيْدُ اَنْ تَقْتُلَنِيْ كَمَا قَتَلْتَ
نَفْسًا بِالْاَمْسِ ۖ اِنْ تُرِيْدُ اِلَّآ اَنْ
تَكُوْنَ جَبَّارًا فِي الْاَرْضِ وَمَا تُرِيْدُ
اَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْمُصْلِحِيْنَ ﴿۱۹﴾

19. सो जब उन्होंने इरादा किया कि उस शख़्सको पकड़ें जो उन दोनोंका दुश्मन है तो वोह बोल उठा : ऐ मूसा ! क्या तुम मुझे (भी) क़त्ल करना चाहते हो जैसा कि तुमने कल एक शख़्स को क़त्ल कर डाला था। तुम सिर्फ़ येही चाहते हो कि मुल्क में बड़े जाबिर बन जाओ और तुम येह नहीं चाहते कि इस्लाह करनेवालों में से बनो।

وَجَآءَ رَجُلٌ مِّنْ اَقْصَا الْمَدِيْنَةِ
يَسْعٰى ۫ قَالَ يٰمُوْسٰٓى اِنَّ الْمَلَاَ

20. और शहर के आख़िरी किनारे से एक शख़्स दौड़ता हुआ हुआ आया उसने कहा : ऐ मूसा !(क़ौम फ़िरऔ़न के) सरदार आप के बारे में मश्वरा कर रहे हैं कि वोह

يَاْتَمِرُوْنَ بِكَ لِيَقْتُلُوْكَ فَاخْرُجْ اِنِّيْ لَكَ مِنَ النّٰصِحِيْنَ ﴿٢٠﴾

आपको क़त्ल कर दें सो आप (यहां से) निकल जाएं बेशक मैं आप के ख़ैर ख़्वाहों में से हूं।

فَخَرَجَ مِنْهَا خَآئِفًا يَّتَرَقَّبُ ۚ قَالَ رَبِّ نَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢١﴾ ع ٢ ٨ ٥

21. सो मूसा (عليه السلام) वहां से ख़ौफ़ ज़दा हो कर (मददे इलाही का) इन्तिज़ार करते हुए निकल खड़े हूए अ़र्ज़ किया : ऐ रब ! मुझे ज़ालिम क़ौमसे नजात अ़ता फ़रमा।

وَلَمَّا تَوَجَّهَ تِلْقَآءَ مَدْيَنَ قَالَ عَسٰى رَبِّيْٓ اَنْ يَّهْدِيَنِيْ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿٢٢﴾

22. और जब वोह मद्यन की तरफ़ रुख़ कर के चले (तो) केहने लगे : उम्मीद है मेरा रब मुझे (मन्ज़िले मक़्सूद तक पहुंचाने के लिए) सीधी राह दिखा देगा।

وَلَمَّا وَرَدَ مَآءَ مَدْيَنَ وَجَدَ عَلَيْهِ اُمَّةً مِّنَ النَّاسِ يَسْقُوْنَ ۖ وَوَجَدَ مِنْ دُوْنِهِمُ امْرَاَتَيْنِ تَذُوْدٰنِ ۚ قَالَ مَا خَطْبُكُمَا ۭ قَالَتَا لَا نَسْقِيْ حَتّٰى يُصْدِرَ الرِّعَآءُ ۡ وَاَبُوْنَا شَيْخٌ كَبِيْرٌ ﴿٢٣﴾

23. और जब वोह मद्यन के पानी (के कुएं) पर पहुंचे तो उन्होंने उस पर लोगों को एक हुजूम पाया जो (अपने जानवरों को) पानी पिला रहे थे और उनसे अलग एक जानिब दो औ़रतें देखीं जो (अपनी बकरियों को) रोके हुए थीं (मूसा عليه السلام ने) फ़रमाया तुम दोनों इस ह़ाल में क्यों (खड़ी) हो? दोनों बोलीं कि हम (अपनी बकरियों को) पानी नहीं पिला सकतीं यहां तक कि चरवाहे (अपने मवेशियों को) वापस ले जाएं और हमारे वालिद उम्र रसीदह बुज़ुर्ग हैं।

فَسَقٰى لَهُمَا ثُمَّ تَوَلّٰٓى اِلَى الظِّلِّ فَقَالَ رَبِّ اِنِّيْ لِمَآ اَنْزَلْتَ اِلَيَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيْرٌ ﴿٢٤﴾

24. सो उन्होंने दोनों (के रेवड़) को पानी पिला दिया फिर साए की तरफ़ पलट गए और अ़र्ज़ किया : ऐ रब ! मैं हर उस भलाई का जो तू मेरी तरफ़ उतारे मोह्ताज हूं।

فَجَآءَتْهُ اِحْدٰىهُمَا تَمْشِيْ عَلَى اسْتِحْيَآءٍ ۡ قَالَتْ اِنَّ اَبِيْ يَدْعُوْكَ لِيَجْزِيَكَ اَجْرَ مَا سَقَيْتَ لَنَا ۭ فَلَمَّا

25. फिर (थोडी देर बाद) उनके पास उन दोनों में से एक (लड़की) आई जो शर्मो ह़याके (अंदाज़) से चल रही थी। उसने कहा : मेरे वालिद आपको बुला रहे हैं ताकि वोह आपको उस (मेह़नत) का मुआ़वज़ा दें जो आपने हमारे

جَآءَهٗ وَقَصَّ عَلَيْهِ الْقَصَصَ ۙ قَالَ لَا تَخَفْ ۫ نَجَوْتَ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٥﴾

लिए (बकरियों को) पानी पिलाया है। सो जब मूसा (عليه السلام) उन (लड़कियों के वालिद शुऐब عليه السلام) के पास आए और उन से (पिछले) वाक़िआ़त बयान किए तो उन्होंने कहा : आप ख़ौफ़ न करें आपने ज़ालिम क़ौम से नजात पा ली है।

قَالَتْ اِحْدٰىهُمَا يٰۤاَبَتِ اسْتَاْجِرْهُ ۫ اِنَّ خَيْرَ مَنِ اسْتَاْجَرْتَ الْقَوِيُّ الْاَمِيْنُ ﴿٢٦﴾

26. उन में से एक (लड़की) ने कहा : ऐ (मेरे) वालिद गिरामी ! उन्हें (अपने पास मज़दूरी) पर रख लें बेशक बेहतरीन शख़्स जिसे आप मज़दूरी पर रखें वोही है जो ताक़तवर अमानतदार हो (और येह इस ज़िम्मेदारी के अहल हैं)।

قَالَ اِنِّيْۤ اُرِيْدُ اَنْ اُنْكِحَكَ اِحْدَى ابْنَتَيَّ هٰتَيْنِ عَلٰۤى اَنْ تَاْجُرَنِيْ ثَمٰنِيَ حِجَجٍ ۚ فَاِنْ اَتْمَمْتَ عَشْرًا فَمِنْ عِنْدِكَ ۚ وَمَاۤ اُرِيْدُ اَنْ اَشُقَّ عَلَيْكَ ؕ سَتَجِدُنِيْۤ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٢٧﴾

27. उन्होंने (मूसा عليه السلام से) कहा : मैं चाहता हूं कि अपनी इन दो लड़कियों में से एक का निकाह़ आप से कर दूं इस (महर) पर कि आप आठ साल तक मेरे पास उजरत पर काम करें फिर अगर आपने दस (साल) पूरे कर दिऐ तो आपकी तरफ़से (एह्सान) होगा और मैं आप पर मशक़्क़त नहीं डालना चाहता, अगर अल्लाहने चाहा तो आप मुझे नेक लोगों में से पाएंगे।

قَالَ ذٰلِكَ بَيْنِيْ وَبَيْنَكَ ؕ اَيَّمَا الْاَجَلَيْنِ قَضَيْتُ فَلَا عُدْوَانَ عَلَيَّ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى مَا نَقُوْلُ وَكِيْلٌ ﴿٢٨﴾ ع ٣ ٤ ٦

28. मूसा (عليه السلام) ने कहा : येह (मुआ़हिदा) मेरे और आपके दरमियान (तय) हो गया, दो में से जो मुद्दत भी मैं पूरी करूं सो मुझ पर कोई जब्र नहीं होगा, और अल्लाह इस (बात) पर जो हम केह रहे हैं निगेहबान है।

فَلَمَّا قَضٰى مُوْسَى الْاَجَلَ وَسَارَ بِاَهْلِهٖۤ اٰنَسَ مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ نَارًا ۚ قَالَ لِاَهْلِهِ امْكُثُوْۤا اِنِّيْۤ

29. फिर जब मूसा (عليه السلام) ने मुक़र्ररा मुद्दत पूरी कर ली और अपनी अहलिया को ले कर चले (तो) उन्होंने तूर की जानिबसे एक आग देखी (वोह शो'लए हुस्ने मुत्लक़ था जिसकी तरफ़ आपकी तबीअ़त मानूस हो गई) उन्होंने

اٰنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّيْٓ اٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِخَبَرٍ اَوْ جَذْوَةٍ مِّنَ النَّارِ لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ ﴿٢٩﴾

अपनी अहलियासे फ़रमाया : तुम (यहीं) ठेहरो मैंने आग देखी है । शायद मैं तुम्हारे लिए उस (आग) से कुछ (उसकी) ख़बर लाऊं (जिसकी तलाश में मुद्दतों से सरगरदां हूं) या आतिशे (सोज़ां) की कोई चिंगारी (ला दूं) ताकि तुम (भी) तप उठो।

فَلَمَّآ اَتٰىهَا نُوْدِيَ مِنْ شَاطِئِ الْوَادِ الْاَيْمَنِ فِي الْبُقْعَةِ الْمُبٰرَكَةِ مِنَ الشَّجَرَةِ اَنْ يّٰمُوْسٰٓى اِنِّيْٓ اَنَا اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٠﴾

30. जब मूसा (عليه السلام) वहां पहुंचे तो वादिए (तूर) के दाएं किनारे से बा बरकत मुक़ाम में (वाके') एक दरख़्त से आवाज़ दी गई कि ऐ मूसा ! बेशक मैं ही अल्लाह हूं (जो) तमाम जहानों का परवरदिगार (हूं)।

وَاَنْ اَلْقِ عَصَاكَ ؕ فَلَمَّا رَاٰهَا تَهْتَزُّ كَاَنَّهَا جَآنٌّ وَّلّٰى مُدْبِرًا وَّ لَمْ يُعَقِّبْ ؕ يٰمُوْسٰٓى اَقْبِلْ وَلَا تَخَفْ ۫ اِنَّكَ مِنَ الْاٰمِنِيْنَ ﴿٣١﴾

31. और येह कि अपनी लाठी (ज़मीन पर) डाल दो फिर जब मूसा (عليه السلام) ने उसे देखा कि वोह तेज़ लेहराती तड़पती हुई हरकत कर रही है गोया वोह सांप हो, तो पीठ फेर कर चल पड़े और पीछे मुड़ कर न देखा, (निदा आई) ऐ मूसा ! सामने आओ और ख़ौफ़ न करो, बेशक तुम अमान याफ़्ता लोगों में से हो।

اُسْلُكْ يَدَكَ فِيْ جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ مِنْ غَيْرِ سُوْٓءٍ ۫ وَّ اضْمُمْ اِلَيْكَ جَنَاحَكَ مِنَ الرَّهْبِ فَذٰنِكَ بُرْهَانٰنِ مِنْ رَّبِّكَ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَ مَلَا۟ئِهٖ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿٣٢﴾

32. अपना हाथ अपने गिरेबान में डालो वोह बिग़ैर किसी ऐब के सफ़ेद चमकदार हो कर निकलेगा और ख़ौफ़ (दूर करनेकी ग़रज़) से अपना बाजू अपने (सीने की) तरफ़ सुकेड़ लो पस तुम्हारे रब की जानिब से येह दो दलीलें फ़िरऔन और उसके दरबारियोंकी तरफ़ (भेजने और मुशाहिदा कराने के लिए) हैं, बेशक वोह नाफ़रमान लोग हैं।

قَالَ رَبِّ اِنِّيْ قَتَلْتُ مِنْهُمْ نَفْسًا فَاَخَافُ اَنْ يَّقْتُلُوْنِ ﴿٣٣﴾

33. (मूसा عليه السلام ने) अर्ज़ किया : ऐ परवरदिगार ! मैंने उन में से एक शख़्सको क़त्ल कर डाला था सो मैं डरता हूं कि वोह मुझे क़त्ल कर डालेंगे।

وَاَخِیْ هٰرُوْنُ هُوَ اَفْصَحُ مِنِّیْ لِسَانًا
فَاَرْسِلْهُ مَعِیَ رِدْاً یُّصَدِّقُنِیْٓ
اِنِّیْٓ اَخَافُ اَنْ یُّكَذِّبُوْنِ ﴿۳۴﴾

34. और मेरे भाई हारून (علیہ السلام), वोह ज़बानमें मुझसे ज़ियादह फ़सीह़ हैं सो उन्हें मेरे साथ मददगार बना कर भेज दे कि वोह मेरी तस्दीक़ कर सकें मैं इस बात से (भी) डरता हूं कि (वोह) लोग मुझे झुटलाएंगे।

قَالَ سَنَشُدُّ عَضُدَكَ بِاَخِیْكَ
وَنَجْعَلُ لَكُمَا سُلْطٰنًا فَلَا یَصِلُوْنَ
اِلَیْكُمَا ۚ بِاٰیٰتِنَآ ۚ اَنْتُمَا وَ مَنِ
اتَّبَعَكُمَا الْغٰلِبُوْنَ ﴿۳۵﴾

35. इर्शाद फ़रमाया : हम तुम्हारा बाज़ू तुम्हारे भाई के ज़रीए मजबूत कर देंगे । और हम तुम दोनों के लिए (लोगोंके दिलों में और तुम्हारी काविशों में) हैबतो ग़ल्बा पैदा किए देते हैं। सो वोह हमारी निशानियों के सबब से तुम तक (गज़न्द पहुंचाने के लिए) नहीं पहुंच सकेंगे तुम दोनों और जो लोग तुम्हारी पैरवी करेंगे ग़ालिब रहेंगे।

فَلَمَّا جَآءَهُمْ مُّوْسٰی بِاٰیٰتِنَا بَیِّنٰتٍ
قَالُوْا مَا هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّفْتَرًی وَّمَا
سَمِعْنَا بِهٰذَا فِیْٓ اٰبَآئِنَا الْاَوَّلِیْنَ ﴿۳۶﴾

36. फिर जब मूसा (علیہ السلام) उनके पास हमारी वाज़ेह़ और रौशन निशानियां ले कर आए तो वोह लोग केहने लगे कि येह तो मन घड़त जादू के सिवा (कुछ) नहीं है। और हमने येह बातें अपने पहले आबाओ अजदाद में (कभी) नहीं सुनी थीं।

وَ قَالَ مُوْسٰی رَبِّیْٓ اَعْلَمُ بِمَنْ
جَآءَ بِالْهُدٰی مِنْ عِنْدِهٖ وَمَنْ
تَكُوْنُ لَهٗ عَاقِبَةُ الدَّارِ ؕ اِنَّهٗ
لَا یُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۳۷﴾

37. और मूसा (علیہ السلام) ने कहा : मेरा रब उसको ख़ूब जानता है जो उसके पाससे हिदायत ले कर आया है और उसको (भी) जिस के लिए आख़िरत के घर का अंजाम (बेहतर) होगा, बेशक ज़ालिम फ़लाह नहीं पाएंगे।

وَ قَالَ فِرْعَوْنُ یٰٓاَیُّهَا الْمَلَاُ مَا
عَلِمْتُ لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَیْرِیْ ۚ
فَاَوْقِدْ لِیْ یٰهَامٰنُ عَلَی الطِّیْنِ فَاجْعَلْ
لِّیْ صَرْحًا لَّعَلِّیْٓ اَطَّلِعُ اِلٰٓی اِلٰهِ مُوْسٰی ۙ
وَ اِنِّیْ لَاَظُنُّهٗ مِنَ الْكٰذِبِیْنَ ﴿۳۸﴾

38. और फ़िरऔ़नने कहा : ऐ दरबारियो ! मैं तुम्हारे लिए अपने सिवा कोई दूसरा मा'बूद नहीं जानता । ऐ हामान ! मेरे लिए गारेको आग लगा (कर कुछ ईंटें पका) दे फिर मेरे लिए (उनसे) एक ऊंची इमारत तैयार कर, शायद मैं (उस पर चढ़ कर) मूसा के ख़ुदा तक रसाई पा सकूं, और मैं तो उसको झूट बोलनेवालों में गुमान करता हूं।

معلقۃ ۱۱

وَاسْتَكْبَرَ هُوَ وَجُنُوْدُهٗ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَ ظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ اِلَيْنَا لَا يُرْجَعُوْنَ ﴿٣٩﴾

39. और उस (फ़िरऔ़न) ने ख़ुद और उसकी फ़ौजोंने मुल्कमें नाह़क़ तकब्बुरो सरकशी की और येह गुमान कर बैठे कि वोह हमारी तरफ़ नहीं लौटाए जाएंगे।

فَاَخَذْنٰهُ وَ جُنُوْدَهٗ فَنَبَذْنٰهُمْ فِي الْيَمِّ ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٠﴾

40. सो हमने उसको और उसकी फ़ौजों को (अ़ज़ाबमें) पकड़ लिया और उनको दरिया में फेंक दिया तो आप देखिए कि ज़ालिमों का अंजाम कैसा (इ़ब्रतनाक) हुआ।

وَجَعَلْنٰهُمْ اَىِٕمَّةً يَّدْعُوْنَ اِلَى النَّارِ ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿٤١﴾

41. और हमने उन्हें (दोज़ख़ियों का) पेशवा बना दिया कि वोह (लोगों को) दोज़ख़ की तरफ़ बुलाते थे और क़ियामत के दिन उनकी कोई मदद नहीं की जाएगी।

وَ اَتْبَعْنٰهُمْ فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً ۚ وَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ هُمْ مِّنَ الْمَقْبُوْحِيْنَ ﴿٤٢﴾ ع ٤ ١٤ ٧

42. और हमने उनके पीछे इस दुनिया में (भी) ला'नत लगा दी और क़ियामतके दिन (भी) वोह बद ह़ाल लोगों में (शुमार) होंगे।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ مِنْۢ بَعْدِ مَآ اَهْلَكْنَا الْقُرُوْنَ الْاُوْلٰى بَصَآىِٕرَ لِلنَّاسِ وَ هُدًى وَّ رَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٣﴾

43. और बेशक हमने इस (सूरते ह़ाल) के बाद कि हम पेहली (ना फ़रमान) कौमोंको हलाक कर चुके थे मूसा (علیہ السلام) को किताब अ़ता की जो लोगों के लिए (ख़ज़ानए) बसीरत और हिदायतो रहमत थी, ताकि वोह नसीह़त क़ुबूल करें।

وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الْغَرْبِيِّ اِذْ قَضَيْنَآ اِلٰى مُوْسَى الْاَمْرَ وَمَا كُنْتَ مِنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٤٤﴾ لا

44. और आप (उस वक़्त तूरकी) मग़रिबी जानिब (तो मौजूद) नहीं थे जब हमने मूसा (علیہ السلام) की तरफ़ हुक्मे (रिसालत) भेजा था, और न (ही) आप (उन सत्तर अफ़राद में शामिल थे जो वह्ये मूसा علیہ السلام की) गवाही देने वालों में से थे (पस येह सारा बयान ग़ैबकी ख़बर नहीं तो और क्या है?)

وَ لٰكِنَّآ اَنْشَاْنَا قُرُوْنًا فَتَطَاوَلَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ۚ وَمَا كُنْتَ ثَاوِيًا فِيْٓ

45. लेकिन हमने (मूसा (علیہ السلام) के बाद यके बाद दीगरे) कई क़ौमें पैदा फ़रमाईं फिर उन पर तवील मुद्दत गुज़र गई

اَهۡلِ مَدۡيَنَ تَتۡلُوۡا عَلَيۡهِمۡ اٰيٰتِنَا ۙ وَلٰكِنَّا كُنَّا مُرۡسِلِيۡنَ ﴿۴۵﴾

और न (ही) आप (मूसा और शुऐब (अलैहिस्सलाम) की तरह) अह्ले मद्यन में मुक़ीम थे कि आप उन पर हमारी आयतें पढ़ कर सुनाते हों लेकिन हम ही (आप को अख़बारे ग़ैबसे सरफ़राज़ फ़रमा कर) मबऊ़स फ़रमानेवाले हैं।

وَمَا كُنۡتَ بِجَانِبِ الطُّوۡرِ اِذۡ نَادَيۡنَا وَلٰكِنۡ رَّحۡمَةً مِّنۡ رَّبِّكَ لِتُنۡذِرَ قَوۡمًا مَّاۤ اَتٰىهُمۡ مِّنۡ نَّذِيۡرٍ مِّنۡ قَبۡلِكَ لَعَلَّهُمۡ يَتَذَكَّرُوۡنَ ﴿۴۶﴾

46. और न (ही) आप तूरके किनारे (उस वक़्त मौजूद) थे जब हमने (मूसा अलैहिस्सलाम को) निदा फ़रमाई मगर (आपको उन तमाम अह्वाले ग़ैब पर मुत्तला' फ़रमाना) आपके रबकी जानिबसे (ख़ुसूसी) रह़मत है। ताकि आप (इन वाक़िआ़त से बा ख़बर हो कर) इस क़ौमको (अ़ज़ाबे इलाहीसे) डराएं जिनके पास आपसे पहले कोई डर सुनानेवाला नहीं आया, ताकि वोह नसीह़त क़ुबूल करें।

وَلَوۡلَاۤ اَنۡ تُصِيۡبَهُمۡ مُّصِيۡبَةٌ ۢ بِمَا قَدَّمَتۡ اَيۡدِيۡهِمۡ فَيَقُوۡلُوۡا رَبَّنَا لَوۡلَاۤ اَرۡسَلۡتَ اِلَيۡنَا رَسُوۡلًا فَنَتَّبِعَ اٰيٰتِكَ وَنَكُوۡنَ مِنَ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ ﴿۴۷﴾

47. और (हम कोई रसूल न भेजते) अगर येह बात न होती कि जब उन्हें कोई मुसीबत पहुंचे उनके आ'माले बद के बाइ़स जो उन्होंने ख़ुद अंजाम दिए तो वोह येह न केहने लगें कि ऐ हमारे रब ! तूने हमारी तरफ़ कोई रसूल क्यूं न भेजा ताकि हम तेरी आयतों की पैरवी करते और हम ईमानवालों में से हो जाते।

فَلَمَّا جَآءَهُمُ الۡحَـقُّ مِنۡ عِنۡدِنَا قَالُوۡا لَوۡلَاۤ اُوۡتِىَ مِثۡلَ مَاۤ اُوۡتِىَ مُوۡسٰى ؕ اَوَلَمۡ يَكۡفُرُوۡا بِمَاۤ اُوۡتِىَ مُوۡسٰى مِنۡ قَبۡلُ ۚ قَالُوۡا سِحۡرٰنِ تَظٰهَرَا ۫ وَقَالُوۡۤا اِنَّا بِكُلٍّ كٰفِرُوۡنَ ﴿۴۸﴾

48. फिर जब उनके पास हमारे हुज़ूरसे ह़क़ आ पहुंचा (तो) वोह केहने लगे कि इस (रसूल) को उन (निशानियों) जैसी (निशानियां) क्यों नहीं दी गईं जो मूसा (अलैहिस्सलाम) को दी गईं थीं? क्या उन्होंने उन (निशानियों) का इन्कार नहीं किया था जो इससे पहले मूसा (अलैहिस्सलाम) को दी गई थीं? वोह केहने लगे कि दोनों (क़ुरआन और तौरात) जादू हैं (जो) एक दूसरे की ताईदो मुवाफ़ेक़त करते हैं, और उन्होंने कहा कि हम (उन) सबके मुन्किर हैं।

قُلۡ فَاۡتُوۡا بِكِتٰبٍ مِّنۡ عِنۡدِ اللّٰهِ هُوَ

49. आप फ़रमा दें कि तुम अल्लाह के हुज़ूर से कोई

اَهْدٰى مِنْهُمَآ اَتَّبِعْهُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٤٩﴾

(और) किताब ले आओ जो इन दोनोंसे ज़ियादह हिदायत वाली हो (तो) मैं उसकी पैरवी करूंगा अगर तुम (अपने इल्ज़ामात में) सच्चे हो।

فَاِنْ لَّمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَكَ فَاعْلَمْ اَنَّمَا يَتَّبِعُوْنَ اَهْوَآءَهُمْ ؕ وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنِ اتَّبَعَ هَوٰىهُ بِغَيْرِ هُدًى مِّنَ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥٠﴾ ع ٨

50. फिर अगर वोह आपका इर्शाद क़ुबूल न करें तो आप जान लें (कि उनके लिए कोई हुज्जत बाक़ी नहीं रही) वोह महज़ अपनी ख़्वाहिशात की पैरवी करते हैं, और उस शख़्ससे ज़ियादह गुमराह कौन हो सक्ता है जो अल्लाहकी जानिबसे हिदायत को छोड़ कर अपनी ख़्वाहिश की पैरवी करे । बेशक अल्लाह ज़ालिम क़ौम को हिदायत नहीं फ़रमाता।

وَلَقَدْ وَصَّلْنَا لَهُمُ الْقَوْلَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٥١﴾ ؕ

51. और दर हक़ीक़त हम उनके लिए पै दर पै (क़ुरआन के) फ़रमान भेजते रहे ताकि वोह नसीहत क़ुबूल करें।

اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِهٖ هُمْ بِهٖ يُؤْمِنُوْنَ ﴿٥٢﴾

52. जिन लोगों को हमने इससे पहले किताब अ़ता की थी वोह (उसी हिदायतकी तसल्सुल में) इस (क़ुरआन) पर (भी) ईमान रखते हैं।

وَاِذَا يُتْلٰى عَلَيْهِمْ قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِهٖٓ اِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّنَآ اِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلِهٖ مُسْلِمِيْنَ ﴿٥٣﴾

النصف

53. और जब उन पर (क़ुरआन) पढ़ कर सुनाया जाता है तो वोह केहते हैं हम इस पर ईमान लाए बेशक येह हमारे रबकी जानिब से हक़ है हक़ीक़तमें तो हम इससे पहले ही मुसलमान (या'नी फ़रमांबरदार) हो चुके थे।

اُولٰٓئِكَ يُؤْتَوْنَ اَجْرَهُمْ مَّرَّتَيْنِ بِمَا صَبَرُوْا وَيَدْرَءُوْنَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿٥٤﴾

54. येह वोह लोग हैं जिन्हें उनका अज्र दोबार दिया जाएगा इस वजहसे कि उन्होंने सब्र किया और वोह बुराईको भलाई के ज़रीए दफ़ा' करते हैं और उस अ़ता में से जो हमने उन्हें बख़्शी ख़र्च करते हैं।

وَاِذَا سَمِعُوا اللَّغْوَ اَعْرَضُوْا عَنْهُ وَقَالُوْا لَنَآ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ

55. और जब वोह कोई बेहूदा बात सुनते हैं तो उससे मुंह फेर लेते हैं और केहते हैं कि हमारे लिए हमारे आ'माल हैं और तुम्हारे लिए तुम्हारे आ'माल, तुम पर सलामती हो

اَعۡمَالُكُمۡ ۫ سَلٰمٌ عَلَيۡكُمۡ ۫ لَا نَبۡتَغِى
الۡجٰهِلِيۡنَ ﴿۵۵﴾

हम जाहिलों (के फ़िक्रो अ़मल) को (अपनाना) नहीं चाहते (गोया उनकी बुराई के इ़वज़ हम अपनी अच्छाई क्यों छोड़ें)।

اِنَّكَ لَا تَهۡدِىۡ مَنۡ اَحۡبَبۡتَ وَلٰكِنَّ
اللّٰهَ يَهۡدِىۡ مَنۡ يَّشَآءُ ۚ وَ هُوَ
اَعۡلَمُ بِالۡمُهۡتَدِيۡنَ ﴿۵۶﴾

56. ह़क़ीक़त येह है कि जिसे आप (हिदायत पर लाना) चाहते हैं उसे साहिबे हिदायत आप ख़ुद नहीं बनाते, बल्कि (यूं होता है कि) जिसे (आप चाहते हैं उसीको) अल्लाह चाहता है (और आपके ज़रीए) साहिबे हिदायत बना देता है और वोह राहे हिदायतकी पेहचान रखनेवालों से ख़ूब वाक़िफ़ है (या'नी जो लोग आपकी चाहत की क़द्र पहचानते हैं वोही हिदायत से नवाज़े जाते हैं)।

وَ قَالُوۡۤا اِنۡ نَّتَّبِعِ الۡهُدٰى مَعَكَ
نُتَخَطَّفۡ مِنۡ اَرۡضِنَا ؕ اَوَ لَمۡ
نُمَكِّنۡ لَّهُمۡ حَرَمًا اٰمِنًا يُّجۡبٰۤى اِلَيۡهِ
ثَمَرٰتُ كُلِّ شَىۡءٍ رِّزۡقًا مِّنۡ لَّدُنَّا
وَلٰكِنَّ اَكۡثَرَهُمۡ لَا يَعۡلَمُوۡنَ ﴿۵۷﴾

57. और (क़द्र ना शनास) केहते हैं कि अगर हम आपकी मइ़य्यत में हिदायत की पैरवी कर लें तो हम अपने मुल्क से उचक लिए जाएंगे। क्या हमने उन्हें (उस) अम्नवाले ह़रम (शहरे मक्का जो आपही का वतन है) में नहीं बसाया जहां हमारी तरफ़से रिज़्क़ के तौर पर (दुनिया की हर सम्तसे) हर जिन्सके फल पहुंचाए जाते हैं, लेकिन उनमें से अक्सर लोग नहीं जानते (कि येह सब कुछ किसके सदक़े से हो रहा है)।

وَ كَمۡ اَهۡلَكۡنَا مِنۡ قَرۡيَةٍۢ بَطِرَتۡ
مَعِيۡشَتَهَا ۚ فَتِلۡكَ مَسٰكِنُهُمۡ لَمۡ
تُسۡكَنۡ مِّنۡۢ بَعۡدِهِمۡ اِلَّا قَلِيۡلًا ؕ
وَكُنَّا نَحۡنُ الۡوٰرِثِيۡنَ ﴿۵۸﴾

58. और हमने कितनी ही (ऐसी) बस्तियों को बरबाद कर डाला जो अपनी ख़ुशह़ाल मईशत पर ग़ुरूरो नाशुक्री कर रही थीं तो येह उनके (तबाह शुदा) मकानात हैं जो उनके बाद कभी आबाद ही नहीं हुए मगर बहुत कम, और (आख़िर कार) हम ही वारिसो मालिक हैं।

وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهۡلِكَ الۡقُرٰى حَتّٰى
يَبۡعَثَ فِىۡۤ اُمِّهَا رَسُوۡلًا يَّتۡلُوۡا

59. और आपका रब बस्तियोंको तबाह करनेवाला नहीं है यहां तक कि वोह उसके बड़े मरकज़ी शहर (Capital) में पयग़म्बर भेज दे जो उन पर हमारी आयतें

عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ۚ وَمَا كُنَّا مُهْلِكِي
الْقُرٰٓى اِلَّا وَاَهْلُهَا ظٰلِمُوْنَ ﴿٥٩﴾

तिलावत करे और हम बस्तियों को हलाक करनेवाले नहीं हैं मगर इस ह़ालमें कि वहां के मकीन ज़ालिम हों।

وَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ
الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَزِيْنَتُهَا ۚ وَمَا عِنْدَ
اللّٰهِ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٠﴾ ع ٦ ١٠ ٩

60. और जो चीज़ भी तुम्हें अ़ता की गई है सो (वोह) दुन्यवी ज़िन्दगीका सामान और उसकी रौनक़ो ज़ीनत है। मगर जो चीज़ (अभी) अल्लाह के पास है वोह (उससे) ज़ियादह बेहतर और दाइमी है। क्या तुम (इस ह़क़ीक़त को) नहीं समझते?

اَفَمَنْ وَّعَدْنٰهُ وَعْدًا حَسَنًا فَهُوَ
لَاقِيْهِ كَمَنْ مَّتَّعْنٰهُ مَتَاعَ الْحَيٰوةِ
الدُّنْيَا ثُمَّ هُوَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مِنَ
الْمُحْضَرِيْنَ ﴿٦١﴾

61. क्या वोह शख़्स जिससे हमने कोई (आख़िरत का) अच्छा वा'दा फ़रमाया हो फिर वोह उसे पानेवाला हो जाऐ, उस (बद नसीब) की मिस्ल हो सक्ता है जिसे हमने दुन्यवी ज़िन्दगी के सामान से नवाज़ा हो फिर वोह (कुफ़्राने ने'मत के बाइस) रोजे क़ियामत (अ़ज़ाब के लिए) ह़ाज़िर किए जानेवालों में से हो जाए?

وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ اَيْنَ
شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿٦٢﴾

62. और जिस दिन (अल्लाह) उन्हें पुकारेगा तो फ़रमाएगा कि मेरे वोह शरीक कहां हैं जिन्हें तुम (मा'बूद) ख़याल किया करते थे?

قَالَ الَّذِيْنَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ
رَبَّنَا هٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ اَغْوَيْنَا ۚ
اَغْوَيْنٰهُمْ كَمَا غَوَيْنَا ۚ تَبَرَّاْنَآ
اِلَيْكَ ۖ مَا كَانُوْٓا اِيَّانَا يَعْبُدُوْنَ ﴿٦٣﴾

63. वोह लोग जिन पर (अ़ज़ाबका) फ़रमान साबित हो चुका कहेंगे: ऐ हमारे रब! येही वोह लोग हैं जिनको हमने गुमराह किया था हमने उन्हें (इसी तरह) गुमराह किया था जिस तरह हम (ख़ुद) गुमराह हुए थे, हम उनसे बेज़ारी ज़ाहिर करते हुए तेरी तरफ़ मुतवज्जे होते हैं और वोह (दर ह़क़ीक़त) हमारी परस्तिश नहीं करते थे (बल्कि अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशात के पुजारी थे)।

وَقِيْلَ ادْعُوْا شُرَكَآءَكُمْ فَدَعَوْهُمْ
فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ وَرَاَوُا الْعَذَابَ ۚ
لَوْ اَنَّهُمْ كَانُوْا يَهْتَدُوْنَ ﴿٦٤﴾

64. और (उनसे) कहा जाएगा तुम अपने (ख़ुद साख़्ता) शरीकों को बुलाओ सो वोह उन्हें पुकारेंगे पस वोह (शरीक) उन्हें कोई जवाब न देंगे और वोह लोग अ़ज़ाब को देख लेंगे काश! वोह (दुनिया में) राहे हिदायत पा चुके होते।

وَ يَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ مَاذَآ
اَجَبْتُمُ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٦٥﴾

65. और जिस दिन (अल्लाह) उन्हें पुकारेगा तो वोह फ़रमाएगा : तुमने पयग़म्बरों को क्या जवाब दिया था?

فَعَمِيَتْ عَلَيْهِمُ الْاَنْۢبَآءُ يَوْمَئِذٍ
فَهُمْ لَا يَتَسَآءَلُوْنَ ﴿٦٦﴾

66. तो उन पर उस दिन ख़बरें पोशीदह हो जाएंगी सो वोह एक दूसरे से पूछ (भी) न सकेंगे।

فَاَمَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا
فَعَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ مِنَ الْمُفْلِحِيْنَ ﴿٦٧﴾

67. लेकिन जिसने तौबा कर ली और ईमान ले आया और नेक अ़मल किया तो यक़ीनन वोह फ़लाह पानेवालों में से होगा।

وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ وَيَخْتَارُ ؕ
مَا كَانَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ
وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٦٨﴾

68. और आपका रब जो चाहता है पैदा फ़रमाता है और (जिसे चाहता है नुबुव्वत और हक़्के शफ़ाअ़त से नवाज़ने के लिए) मुन्तख़ब फ़रमा लेता है, उन (मुन्किर और मुशरिक) लोगों को (उस अम्र में) कोई मरज़ी और इख़्तियार हासिल नहीं है। अल्लाह पाक है और बाला तर है उन (बातिल मा'बूदों) से जिन्हें वोह (अल्लाह का) शरीक गरदान्ते हैं।

وَرَبُّكَ يَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُوْرُهُمْ
وَمَا يُعْلِنُوْنَ ﴿٦٩﴾

69. और आपका रब उन (तमाम बातों) को जानता है जो उनके सीने (अपने अंदर) छुपाए हुए हैं और जो कुछ वोह आश्कार करते हैं।

وَهُوَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ لَهُ الْحَمْدُ
فِى الْاُوْلٰى وَالْاٰخِرَةِ ۫ وَلَهُ الْحُكْمُ
وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٧٠﴾

70. और वोही अल्लाह है उसके सिवा कोई मा'बूद नहीं। दुनिया और आख़िरत में सारी ता'रीफ़ें उसी के लिए हैं, और (ह़क़ीक़ी) हुक्मो फ़रमां रवाई (भी) उसी की है और तुम उसी की तरफ़ लौटाए जाओगे।

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيْكُمُ
الَّيْلَ سَرْمَدًا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ
مَنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِضِيَآءٍ ؕ
اَفَلَا تَسْمَعُوْنَ ﴿٧١﴾

71. फ़रमा दीजिए : ज़रा इतना बताओ कि अगर अल्लाह तुम्हारे ऊपर रोज़े क़ियामत तक हमेशा रात तारी फ़रमा दे (तो) अल्लाहके सिवा कौन मा'बूद है जो तुम्हें रौशनी ला दे। क्या तुम (येह बातें) सुनते नहीं हो?

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيْكُمُ
النَّهَارَ سَرْمَدًا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ
مَنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِلَيْلٍ
تَسْكُنُوْنَ فِيْهِ ؕ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ﴿۷۲﴾
وَ مِنْ رَّحْمَتِهٖ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ وَ
النَّهَارَ لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ وَ لِتَبْتَغُوْا
مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۷۳﴾
وَ يَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ اَيْنَ
شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿۷۴﴾

وَنَزَعْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا فَقُلْنَا
هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ فَعَلِمُوْٓا اَنَّ الْحَقَّ لِلّٰهِ
وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿۷۵﴾ ع ۱۵/۱۰
اِنَّ قَارُوْنَ كَانَ مِنْ قَوْمِ مُوْسٰى
فَبَغٰى عَلَيْهِمْ ۪ وَ اٰتَيْنٰهُ مِنَ الْكُنُوْزِ
مَآ اِنَّ مَفَاتِحَهٗ لَتَنُوْٓاُ بِالْعُصْبَةِ اُولِي
الْقُوَّةِ ۗ اِذْ قَالَ لَهٗ قَوْمُهٗ لَا تَفْرَحْ
اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْفَرِحِيْنَ ﴿۷۶﴾
وَ ابْتَغِ فِيْمَآ اٰتٰىكَ اللّٰهُ الدَّارَ
الْاٰخِرَةَ وَ لَا تَنْسَ نَصِيْبَكَ مِنَ
الدُّنْيَا وَ اَحْسِنْ كَمَآ اَحْسَنَ اللّٰهُ

72. फ़रमा दीजिए : ज़रा येह (भी) बताओ कि अगर अल्लाह तुम्हारे उपर रोज़े क़ियामत तक हमेशा दिन तारी फ़रमा दे (तो) अल्लाह के सिवा कौन मा'बूद है जो तुम्हें रात लादे कि तुम उसमें आराम कर सको, क्या तुम देखते नहीं हो?

73. और उसने अपनी रह़मतसे तुम्हारे लिए रात और दिनको बनाया ताकि तुम रातमें आराम करो और (दिन में) उसका फ़ज़्ल (रोज़ी) तलाश कर सको और ताकि तुम शुक्र गुज़ार बनो।

74. और जिस दिन वोह उन्हें पुकारेगा तो इर्शाद फ़रमाएगा कि मेरे वोह शरीक कहां हैं जिन्हें तुम (मा'बूद) ख़याल करते थे।

75. और हम हर उम्मत से एक गवाह निकालेंगे फिर हम (कुफ़्फ़ार से) कहेंगे कि तुम अपनी दलील लाओ तो वोह जान लेंगे कि सच बात अल्लाह ही की है ओर उनसे वोह सब (बातें) जाती रहेंगी जो वोह झूट बांधा करते थे।

76. बेशक क़ारून मूसा (علیہ السلام) की क़ौमसे था फिर उसने लोगों पर सरकशी की और हमने उसे इस क़दर ख़ज़ाने अ़ता किए थे कि उसकी कुन्जियां (उठाना) एक बड़ी ताक़तवर जमाअ़त को दुश्वार होता था जबकि उसकी क़ौमने उससे कहा तू (ख़ुशी के मारे) ग़ुरूर न कर बेशक अल्लाह इतरानेवालों को पसंद नहीं फ़रमाता।

77. और तू उस (दौलत) में से जो अल्लाह ने तुझे दे रखी है आख़िरत का घर तलब कर, और दुनिया से (भी) अपना ह़िस्सा न भूल और तू (लोगों से वैसा ही) एह़सान कर जैसा एह़सान अल्लाहने तुझसे फ़रमाया है और मुल्क

إِلَيْكَ وَلَا تَبْغِ الْفَسَادَ فِي الْأَرْضِ ۖ
إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِينَ ﴿٧٧﴾

में (ज़ुल्म, इर्तिकाज़ और इस्तेह्सालकी सूरत में) फ़साद अंगेज़ी (की राहें) तलाश न कर, बेशक अल्लाह फ़साद बपा करनेवालों को पसंद नहीं फ़रमाता।

قَالَ إِنَّمَا أُوتِيتُهُ عَلَىٰ عِلْمٍ
عِندِي ۚ أَوَلَمْ يَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ قَدْ
أَهْلَكَ مِن قَبْلِهِ مِنَ الْقُرُونِ مَنْ هُوَ
أَشَدُّ مِنْهُ قُوَّةً وَأَكْثَرُ جَمْعًا ۚ وَلَا
يُسْأَلُ عَن ذُنُوبِهِمُ الْمُجْرِمُونَ ﴿٧٨﴾

78. वोह केहने लगा : (में येह माल मुआ़शरे और अ़वाम पर क्यों ख़र्च करूं) मुझे तो येह माल सिर्फ़ उस (कस्बी) इल्मो हुनर की बिना पर दिया गया है जो मेरे पास है। क्या उसे येह मा'लूम न था कि अल्लाहने वाक़िअ़तन उससे पहले बहुत सी ऐसी क़ौमों को हलाक कर दिया था जो ताक़त में उससे कहीं ज़ियादह सख़्त थीं और (मालो दौलत और अफ़्रादी कुव्वत के) जमा' करने में कहीं ज़ियादह (आगे) थीं, और (ब वक़्ते हलाकत) मुजरिमों से उनके गुनाहों के बारे में (मज़ीद तह़क़ीक़ या कोई उ़ज़्र और सबब) नहीं पूछा जाएगा।

فَخَرَجَ عَلَىٰ قَوْمِهِ فِي زِينَتِهِ ۖ قَالَ
الَّذِينَ يُرِيدُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا
يَا لَيْتَ لَنَا مِثْلَ مَا أُوتِيَ قَارُونُ ۙ
إِنَّهُ لَذُو حَظٍّ عَظِيمٍ ﴿٧٩﴾

79. फिर वोह अपनी क़ौमके सामने (पूरी) ज़ीनतो आराइश (की ह़ालत) में निकला। (उसकी ज़ाहिरी शानो शौकत को देख कर) वोह लोग बोल उठे जो दुन्यवी ज़िन्दगी के ख़्वाहिशमंद थे काश ! हमारे लिए (भी) ऐसा (मालो मताअ़) होता जैसा क़ारून को दिया गया है। बेशक वोह बड़े नसीबवाला है।

وَقَالَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ وَيْلَكُمْ
ثَوَابُ اللَّهِ خَيْرٌ لِّمَنْ آمَنَ وَعَمِلَ
صَالِحًا ۚ وَلَا يُلَقَّاهَا إِلَّا الصَّابِرُونَ ﴿٨٠﴾

80. और (दूसरी तरफ़) वोह लोग जिन्हें इल्मे (ह़क़) दिया गया था बोल उठे तुम पर अफ़्सोस है अल्लाह का सवाब उश शख़्स के लिए (इस दौलतो ज़ीनत से कहीं ज़ियादह) बेहतर है जो ईमान लाया हो और नेक अ़मल करता हो मगर येह (अज्रो सवाब) सब्र करनेवालों के सिवा किसी को अ़ता नहीं किया जाएगा।

فَخَسَفْنَا بِهِ وَبِدَارِهِ الْأَرْضَ ۖ
فَمَا كَانَ لَهُ مِن فِئَةٍ يَنصُرُونَهُ
مِن دُونِ اللَّهِ ۖ وَمَا كَانَ مِنَ

81. फिर हमने उस (क़ारून) को और उसके घर को ज़मीनमें धंसा दिया, सो अल्लाह के सिवा उस के लिए कोई भी जमाअ़त (ऐसी) न थी जो (अ़ज़ाब से बचाने में) उसकी मदद कर सक्ती और वोह न ख़ुद ही अ़ज़ाब को

रोक सका।

الْمُنْتَصِرِيْنَ ﴿٨١﴾

82. और जो लोग कल उसके मक़ामो मर्तबे की तमन्ना कर रहे थे (अज़ रहे नदामत) केहने लगे : कितना अ़जीब है कि अल्लाह अपने बंदों में से जिस के लिए चाहता है रिज़्क़ कुशादह फरमाता और (जिस के लिए) चाहता है तंग फ़रमाता है अगर अल्लाह ने हम पर एह़सान न फ़रमाया होता तो हमें (भी) धंसा देता, हाए तअ़ज्जुब है ! (अब मा'लूम हुआ) कि काफ़िर नजात नहीं पा सक्ते।

وَ اَصْبَحَ الَّذِيْنَ تَمَنَّوْا مَكَانَهٗ بِالْاَمْسِ يَقُوْلُوْنَ وَيْكَاَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ ۚ لَوْلَآ اَنْ مَّنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا لَخَسَفَ بِنَا ؕ وَيْكَاَنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٨٢﴾ ع ٨ ٧ ١١

83. (येह) वोह आख़िरत का घर है जिसे हमने ऐसे लोगों केलिए बनाया है जो न (तो) ज़मीन में सरकशी व तकब्बुर चाहते हैं और न फ़साद अंगेज़ी, और नेक अंजाम परहेज़गारों के लिए है।

تِلْكَ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِيْنَ لَا يُرِيْدُوْنَ عُلُوًّا فِي الْاَرْضِ وَ لَا فَسَادًا ؕ وَ الْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿٨٣﴾

84. जो शख़्स नेकी ले कर आएगा उसके लिए उससे बेहतर (सिला) है और जो शख़्स बुराई ले कर आएगा तो बुरे काम करनेवालों को कोई बदला नहीं दिया जाएगा मगर उसी क़द्र जो वोह करते रहे थे।

مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ وَ مَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَى الَّذِيْنَ عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٨٤﴾

85. बेशक जिस (रब) ने आप पर क़ुरआन (की तबलीग़ो इक़ामतको) फ़र्ज़ किया है यक़ीनन वोह आपको (आपकी चाहतके मुताबिक़) लौटनेकी जगह (मक्का या आख़िरत) की तरफ़ (फ़त्हो कामयाबी के साथ) वापस ले जानेवाला है। फ़रमा दीजिए : मेरा रब उसे खूब जानता है जो हिदायत ले कर आया और उसे (भी) जो सरीह़ गुमराही में है। ★

اِنَّ الَّذِيْ فَرَضَ عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لَرَآدُّكَ اِلٰى مَعَادٍ ؕ قُلْ رَّبِّيْٓ اَعْلَمُ مَنْ جَآءَ بِالْهُدٰى وَ مَنْ هُوَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٨٥﴾

★(येह आयत मक्कासे मदीनाकी तरफ़ हिजरत फ़रमाते हूए जोह़फ़ा के मुक़ाम पर नाज़िल हूई और येह वा'दा ह फ़त्ह़े मक्काके दिन पूरा हो गया)

وَمَا كُنْتَ تَرْجُوْٓا اَنْ يُّلْقٰٓى اِلَيْكَ
الْكِتٰبُ اِلَّا رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ فَلَا
تَكُوْنَنَّ ظَهِيْرًا لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿٨٦﴾
وَلَا يَصُدُّنَّكَ عَنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ بَعْدَ اِذْ
اُنْزِلَتْ اِلَيْكَ وَادْعُ اِلٰى رَبِّكَ وَلَا
تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٨٧﴾
وَلَا تَدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ لَآ اِلٰهَ
اِلَّا هُوَ كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ اِلَّا وَجْهَهٗ
لَهُ الْحُكْمُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٨٨﴾

86. और तुम (हुज़ूर ﷺ) की वसातत से उम्मते मुहम्मदी को ख़िताब है) इस बातकी उम्मीद न रखते थे कि तुम पर (येह) किताब उतारी जाएगी मगर (येह) तुम्हारे रबकी रहमत (से उतरी) है पस तुम हरगिज़ काफ़िरों के मददगार न बनना।
87. और वोह (कुफ़्फ़ार) तुम्हें हरगिज़ अल्लाह की आयतों (की ता'मीलो तब्लीग़) से बाज़ न रखें इसके बाद कि वोह तुम्हारी तरफ़ उतारी जा चुकी हैं और तुम (लोगोंको) अपने रब की तरफ़ बुलाते रहो और मुशरिकों में से हरगिज़ न होना।
88. और तुम अल्लाह के साथ किसी दूसरे (ख़ुद साख़्ता) मा'बूद को न पूजा करो, उसके सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, उसकी ज़ातके सिवा हर चीज़ फ़ानी है, हुक्म उसीका है और तुम (सब) उसी की तरफ़ लौटाए जाओगे।

आयातुहा 69 | 29 सूरतुल अन्कबूति मक्किय्यतुन 85 | रुकूआतुहा 7

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

الٓمّٓ ﴿١﴾

1. अलिफ़ लाम मीम (हक़ीक़ी मा'ना अल्लाह और रसूल ﷺ ही बेहतर जानते हैं)।

اَحَسِبَ النَّاسُ اَنْ يُّتْرَكُوْٓا اَنْ
يَّقُوْلُوْٓا اٰمَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُوْنَ ﴿٢﴾

2. क्या लोग येह ख़याल करते हैं कि (सिर्फ़) उनके (इतना) केहने से कि हम ईमान ले आए हैं छोड़ दिए जाएंगे और उनकी आज़माइश न की जाएगी?

وَلَقَدْ فَتَنَّا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ
فَلَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا
وَلَيَعْلَمَنَّ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٣﴾
اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ

3. और बेशक हमने उन लोगोंको (भी) आज़माया था जो उनसे पहले थे सो यक़ीनन अल्लाह उन लोगोंको ज़रूर (आज़माइश के ज़रीए) नुमायां फ़रमा देगा जो (दा'वए ईमान में) सच्चे हैं और झूटों को (भी) ज़रूर ज़ाहिर कर देगा।
4. क्या जो लोग बुरे काम करते हैं येह गुमान किए हुए हैं

السَّيِّاٰتِ اَنْ يَّسْبِقُوْنَا ؕ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ۝٤

कि वोह हमारे (क़ाबू) से बाहर निकल जाएंगे? क्या ही बुरा है जो वोह (अपने जेहनों में) फ़ैसला करते हैं।

مَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ اللّٰهِ فَاِنَّ اَجَلَ اللّٰهِ لَاٰتٍ ؕ وَ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝٥

5. जो शख़्स अल्लाहसे मुलाक़ात की उम्मीद रखता है तो बेशक अल्लाह का मुक़र्रर कर्दह वक़्त ज़रूर आनेवाला है, और वोही सुननेवाला जाननेवाला है।

وَمَنْ جَاهَدَ فَاِنَّمَا يُجَاهِدُ لِنَفْسِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَغَنِيٌّ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ۝٦

6. जो शख़्स (राहे हक़ में) जद्दो जहद करता है वोह अपने ही (नफ़्’ के) लिए तगो दव करता है, बेशक अल्लाह तमाम जहानों (की ताअ़तों कोशिशों और मुजाहिदों) से बे नियाज़ है।

وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَ لَنَجْزِيَنَّهُمْ اَحْسَنَ الَّذِيْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝٧

7. और जो लोग ईमान लाए और नेक अ़मल करते रहे तो हम उनकी सारी ख़ताएं उन (के नामाए आ’माल) से मिटा देंगे और हम यक़ीनन उन्हें उस से बेहतर जज़ा अ़ता फ़रमा देंगे जो अ़मल वोह (फ़िल वाक़े’) करते रहे थे।

وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حُسْنًا ؕ وَ اِنْ جَاهَدٰكَ لِتُشْرِكَ بِيْ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا ؕ اِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝٨

8. और हमने इन्सान को उसके वालिदैन से नेक सुलूक का हुक्म फ़रमाया और अगर वोह तुझ पर (येह) कोशिश करें कि तू मेरे साथ उस चीज़ को शरीक ठेहराए जिसका तुझे कुछ भी इ़ल्म नहीं तो उनकी इताअ़त मत कर, मेरी ही तरफ़ तुम (सब) को पलटना है सो में तुम्हें उन (कामों) से आगाह कर दूंगा जो तुम (दुनिया में) किया करते थे।

وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُدْخِلَنَّهُمْ فِي الصّٰلِحِيْنَ ۝٩

9. और जो लोग ईमान लाए और नेक आ’माल करते रहे तो हम उन्हें ज़रूर नेकूकारों (के गिरोह) में दाख़िल फ़रमा देंगे।

وَ مِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ فَاِذَآ اُوْذِيَ فِي اللّٰهِ جَعَلَ فِتْنَةَ النَّاسِ كَعَذَابِ اللّٰهِ ؕ وَلَئِنْ جَآءَ

10. और लोगों में ऐसे शख़्स (भी) होते हैं जो (ज़बान से) केहते हैं कि हम अल्लाह पर ईमान लाए फिर जब उन्हें अल्लाह की राहमें (कोई) तक्लीफ़ पहुंचाई जाती है तो वोह लोगोंकी आज़माइश को अल्लाह के अ़ज़ाब की

نَصْرٌ مِّنْ رَّبِّكَ لَيَقُوْلُنَّ اِنَّا كُنَّا
مَعَكُمْ ؕ اَوَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِمَا
فِيْ صُدُوْرِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠﴾
وَلَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
وَلَيَعْلَمَنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ ﴿١١﴾
وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا
اتَّبِعُوْا سَبِيْلَنَا وَلْنَحْمِلْ خَطٰيٰكُمْ ؕ
وَمَا هُمْ بِحٰمِلِيْنَ مِنْ خَطٰيٰهُمْ
مِّنْ شَيْءٍ ؕ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿١٢﴾
وَلَيَحْمِلُنَّ اَثْقَالَهُمْ وَاَثْقَالًا مَّعَ
اَثْقَالِهِمْ ۫ وَلَيُسْـَٔلُنَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ
عَمَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿١٣﴾ ع ١ ١٣ ١٢
وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَلَبِثَ
فِيْهِمْ اَلْفَ سَنَةٍ اِلَّا خَمْسِيْنَ عَامًا ؕ
فَاَخَذَهُمُ الطُّوْفَانُ وَهُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿١٤﴾
فَاَنْجَيْنٰهُ وَاَصْحٰبَ السَّفِيْنَةِ وَ
جَعَلْنٰهَآ اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿١٥﴾
وَاِبْرٰهِيْمَ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا
اللّٰهَ وَاتَّقُوْهُ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ
كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿١٦﴾

मानिन्द क़रार देते हैं, और अगर आपके रबकी जानिबसे कोई मदद आ पहुंचती है तो वोह यक़ीनन येह केहने लगते हैं कि हम तो तुम्हारे साथ ही थे, क्या अल्लाह उन (बातों) को नहीं जानता जो जहानवालों के सीनों में (पोशीदह) हैं।

11. और अल्लाह ज़रूर ऐसे लोगोंको मुमताज़ फ़रमा देगा जो (सच्चे दिलसे) ईमान लाए हैं और मुनाफ़िक़ों को (भी) ज़रूर ज़ाहिर कर देगा।

12. और काफ़िर लोग ईमानवालों से केहते हैं कि तुम हमारी राह की पैरवी करो और हम तुम्हारी ख़ताओं (के बोझ) को उठा लेंगे, ह़ालां कि वोह उन के गुनाहों का कुछ भी (बोझ) उठानेवाले नहीं हैं बेशक वोह झूटे हैं।

13. वोह यक़ीनन अपने (गुनाहों के) बोझ उठाएंगे और अपने बोझों के साथ कई (दूसरे) बोझ (भी अपने ऊपर लादे होंगे) और उनसे रोज़े क़ियामत उन (बोहतानों) की ज़रूर पुर्सिश की जाएगी जो वोह घड़ा करते थे।

14. और बेशक हमने नूह़ (عليه السلام) को उनकी क़ौम की तरफ़ भेजा तो वोह उनमें पचास बरस कम एक हज़ार साल रहे फिर उन लोगों को तूफ़ानने आ पकड़ा इस ह़ाल में कि वोह ज़ालिम थे।

15. फिर हमने नूह़ (عليه السلام) को और (उन के हमराह) कश्तीवालोंको नजात बख़्शी और हमने उस (कश्ती और वाक़िए) को तमाम जहानवालों के लिए निशानी बना दिया।

16. और इब्राहीम (عليه السلام) को (याद करें) जब उन्होंने अपनी क़ौमसे फ़रमाया कि तुम अल्लाहकी इबादत करो और उससे डरो, येही तुम्हारे ह़क़में बेहतर है अगर तुम (ह़क़ीक़त को) जानते हो।

اِنَّمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْثَانًا وَّ
تَخْلُقُوْنَ اِفْكًا ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ تَعْبُدُوْنَ
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَا يَمْلِكُوْنَ لَكُمْ رِزْقًا
فَابْتَغُوْا عِنْدَ اللّٰهِ الرِّزْقَ وَاعْبُدُوْهُ
وَاشْكُرُوْا لَهٗ ؕ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿۱۷﴾

17. तुम तो अल्लाह के सिवा बुतों की पूजा करते हो और महज़ झूट घड़ते हो, बेशक तुम अल्लाह के सिवा जिनकी पूजा करते हो वोह तुम्हारे लिए रिज़्क़ के मालिक नहीं हैं पस तुम अल्लाहकी बारगाह से रिज़्क़ तलब किया करो और उसीकी इबादत किया करो और उसीका शुक्र बजा लाया करो, तुम उसीकी तरफ़ पलटाए जाओगे।

وَاِنْ تُكَذِّبُوْا فَقَدْ كَذَّبَ اُمَمٌ مِّنْ
قَبْلِكُمْ ؕ وَمَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ
الْمُبِيْنُ ﴿۱۸﴾

18. और अगर तुमने (मेरी बातों को) झुटलाया तो यक़ीनन तुमसे पहले (भी) कई उम्मतें (हक़ को) झुटला चुकी हैं, और रसूल पर वाज़ेह तरीक़से (अहकाम) पहुंचा देने के सिवा (कुछ लाज़िम) नहीं है।

اَوَ لَمْ يَرَوْا كَيْفَ يُبْدِئُ اللّٰهُ
الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى
اللّٰهِ يَسِيْرٌ ﴿۱۹﴾

19. क्या उन्होंने नहीं देखा (या'नी ग़ौर नहीं किया) कि अल्लाह किस तरह तख़्लीक़ की इब्तिदा फ़रमाता है फिर (उसी तरह) उसका इआ़दा फ़रमाता है । बेशक येह (काम) अल्लाह पर आसान है।

قُلْ سِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا
كَيْفَ بَدَاَ الْخَلْقَ ثُمَّ اللّٰهُ يُنْشِئُ
النَّشْاَةَ الْاٰخِرَةَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ
شَىْءٍ قَدِيْرٌ ۚ ﴿۲۰﴾

20. फ़रमा दीजिए : तुम ज़मीन में (काइनाती ज़िन्दगी के मुतालिए के लिए) चलो फिरो, फिर देखो (या'नी ग़ौरो तह़क़ीक़ करो) के उसने मख़्लूक़ की (ज़िन्दगी की) इब्तिदा कैसे फ़रमाई फिर वोह दूसरी ज़िन्दगी को किस तरह उठा कर (इर्तिक़ा मराहिल से गुज़ारता हुआ) नश्वो नुमा देता है । बेशक अल्लाह हर शैअ पर बड़ी क़ुदरत रखनेवाला है।

يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ وَ يَرْحَمُ مَنْ
يَّشَآءُ ۚ وَاِلَيْهِ تُقْلَبُوْنَ ﴿۲۱﴾

21. वोह जिसे चाहता है अ़ज़ाब देता है और जिस पर चाहता है रह़म फ़रमाता है और उसीकी तरफ़ तुम पलटाए जाओगे।

وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ فِى الْاَرْضِ
وَلَا فِى السَّمَآءِ ۫ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ
اللّٰهِ مِنْ وَّلِىٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿۲۲﴾ ع ۲ ۹ ۱۴

22. और न तुम (अल्लाहको) ज़मीन में आ़जिज़ करनेवाले हो और न आस्मानमें और न तुम्हारे लिए अल्लाहके सिवा कोई दोस्त है और न मददगार।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَ لِقَآئِهٖٓ اُولٰٓئِكَ يَئِسُوْا مِنْ رَّحْمَتِيْ وَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٢٣﴾

23. और जिन लोगोंने अल्लाह की आयतोंका और उसकी मुलाक़ात का इन्कार किया वोह लोग मेरी रह़मत से मायूस हो गए और उन्ही लोगों के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है।

فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوا اقْتُلُوْهُ اَوْ حَرِّقُوْهُ فَاَنْجٰىهُ اللّٰهُ مِنَ النَّارِ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٢٤﴾

24. सो क़ौमे इब्राहीम का जवाब इस के सिवा कुछ न था कि वोह केहने लगे : तुम उसे क़त्ल कर डालो या उसे जला दो, फिर अल्लाहने उसे (नमरूद की) आगसे नजात बख़्शी, बेशक इस (वाक़िए) में उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो ईमान लाए हैं।

وَقَالَ اِنَّمَا اتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْثَانًا ۙ مَّوَدَّةَ بَيْنِكُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ ثُمَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكْفُرُ بَعْضُكُمْ بِبَعْضٍ وَّيَلْعَنُ بَعْضُكُمْ بَعْضًا ۠ وَّ مَاْوٰىكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٢٥﴾

25. और इब्राहीम (عليه السلام)ने कहा : बस तुमने तो अल्लाह को छोड़ कर बुतोंको मा'बूद बना लिया है मह़ज़ दुन्यवी ज़िन्दगीमें आपस की दोस्ती की ख़ातिर फिर रोज़े क़ियामत तुम में से (हर) एक दूसरे (की दोस्ती) का इन्कार कर देगा और तुम में से (हर) एक दूसरे पर ला'नत भेजेगा तो तुम्हारा ठिकाना दोज़ख़ है और तुम्हारे लिए कोई भी मददगार न होगा।

فَاٰمَنَ لَهٗ لُوْطٌ ۘ وَقَالَ اِنِّيْ مُهَاجِرٌ اِلٰى رَبِّيْ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٢٦﴾

وقف لازم

26. फिर लूत (عليه السلام) उन पर (या'नी इब्राहीम عليه السلام पर) ईमान ले आए और उन्होंने कहा : मैं अपने रब की तरफ़ हिजरत करने वाला हूं। बेशक वोह ग़ालिब है ह़िक्मत वाला है।

وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَ جَعَلْنَا فِيْ ذُرِّيَّتِهِ النُّبُوَّةَ وَالْكِتٰبَ وَاٰتَيْنٰهُ اَجْرَهٗ فِي الدُّنْيَا ۚ وَ اِنَّهٗ فِي الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٢٧﴾

27. और हमने उन्हें इस्ह़ाक़ और या'क़ूब (عليه السلام बेटा और पोता) अ़ता फ़रमाए और हमने इब्राहीम (عليه السلام) की औलाद में नुबुव्वत और किताब मुक़र्रर फ़रमा दी और हमने उन्हें दुनिया में (ही) उनका सिला अ़ता फ़रमा दिया और बेशक वोह आख़िरत में (भी) नेकूकारों में से हैं।

وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اِنَّكُمْ

28. और लूत (عليه السلام) को (याद करें) जब उन्होंने अपनी

لَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ ۫ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا
مِنْ اَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۲۸﴾

कौमसे कहा : बेशक तुम बड़ी बे ह़याईका इर्तिकाब करते हो, अह्लमे आलम में से किसी एक (क़ौम) ने (भी) उस (बेहयाई) में तुम से पेहल नहीं की।

اَئِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ وَتَقْطَعُوْنَ
السَّبِيْلَ ۙ۬ وَ تَاْتُوْنَ فِيْ نَادِيْكُمُ
الْمُنْكَرَ ؕ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖۤ اِلَّاۤ
اَنْ قَالُوا ائْتِنَا بِعَذَابِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتَ
مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿۲۹﴾

29. क्या तुम (शहवत रानी के लिए) मर्दों के पास जाते हो और डाका ज़नी करते हो और अपनी (भरी) मजलिस में ना पसंदीदा काम करते हो, तो उनकी क़ौमका जवाब (भी) इसके सिवा कुछ न था के केहने लगे : तुम हम पर अल्लाहका अ़ज़ाब ले आओ अगर तुम सच्चे हो।

قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ عَلَى الْقَوْمِ
الْمُفْسِدِيْنَ ﴿۳۰﴾ ع ۳ ۸ ۱۵

30. लूत (علیہ السلام) ने अ़र्ज़ किया : ऐ रब ! तू फ़साद अंगेज़ी करने वाली क़ौमके खिलाफ मेरी मदद फ़रमा।

وَ لَمَّا جَآءَتْ رُسُلُنَاۤ اِبْرٰهِيْمَ
بِالْبُشْرٰى ۙ قَالُوْۤا اِنَّا مُهْلِكُوْۤا
اَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ ۚ اِنَّ اَهْلَهَا
كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ﴿۳۱﴾ ۚ

31. और जब हमारे भेजे हूए (फ़रिश्ते) इब्राहीम (علیہ السلام) के पास खुशख़बरी ले कर आए(तो) उन्होंने (साथ) येह (भी) कहाकि हम इस बस्तीके कमीनों को हलाक करनेवाले हैं क्योंके यहांके बाशिन्दे ज़ालिमहैं।

قَالَ اِنَّ فِيْهَا لُوْطًا ؕ قَالُوْا نَحْنُ
اَعْلَمُ بِمَنْ فِيْهَا ۫ لَنُنَجِّيَنَّهٗ وَ
اَهْلَهٗۤ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۫ كَانَتْ مِنَ
الْغٰبِرِيْنَ ﴿۳۲﴾

32. इब्राहीम (علیہ السلام) ने कहा : इस (बस्ती) में तो लूत (علیہ السلام भी) हैं उन्होंने कहा : हम उन लोगोंको खूब जानते हैं जो (जो) उसमें (रेहते) हैं हम लूत (علیہ السلام) को और उनके घरवालों को सिवाए उनकी औ़रत के ज़रूर बचा लेंगे, वोह पीछे रेह जानेवालों में से है।

وَ لَمَّاۤ اَنْ جَآءَتْ رُسُلُنَا لُوْطًا
سِيْٓءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَّ
قَالُوْا لَا تَخَفْ وَ لَا تَحْزَنْ ۫ اِنَّا
مُنَجُّوْكَ وَ اَهْلَكَ اِلَّا امْرَاَتَكَ

33. और जब हमारे भेजे हूए (फरिश्ते) लूत (علیہ السلام) के पास आए तो वोह उन (के आने) से रंजीदाह हूए और उनके (अरादाहऐ अ़ज़ाबके) बाइ़स निढाल से हो गए और (फरिश्तोंने) कहा : आप न ख़ौफ़जदा हों बेशक हम आपको और आपके घरवालोंको बचानेवाले हैं सिवाए

كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٣٣﴾

आपकी औ़रतके वोह (अ़ज़ाब के लिए) पीछे रेह जाने वालों में से है।

اِنَّا مُنْزِلُوْنَ عَلٰٓى اَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿٣٤﴾

34. बेशक हम उस बस्ती के बाशिन्दों पर आस्मानसे अ़ज़ाब नाज़िल करनेवाले हैं उस वजहसे के वोह ना फ़रमानी किया करते थे।

وَلَقَدْ تَّرَكْنَا مِنْهَآ اٰيَةًۢ بَيِّنَةً لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٣٥﴾

35. और बेशक हमने उस बस्ती से (वीरान मकानों को) एक वाज़ेह़ निशानी के तौर पर अक्लमंद लोगों के लिए बर क़रार रखा।

وَاِلٰى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۙ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَارْجُوا الْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَلَا تَعْثَوْا فِى الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿٣٦﴾

36. और मद्यनकी तरफ़ उनके (क़ौमी) भाई शुएब (علیہ السلام) को (भेजा) सो उन्हों ने कहा : ऐ मेरी क़ौम अल्लाहकी इ़बादत करो और योमे आख़िरतकी उम्मीद रखो और ज़मीन में फसाद अंगेजी न करते फिरो।

فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِىْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٣٧﴾

37. तो उन्होंने शुएब (علیہ السلام) को झुटला डाला पस उन्हें (भी) ज़ल्ज़ले (के अ़ज़ाब) ने आ पकडा, सो उन्होंने सुब्ह़ उस ह़ाल में ही अपने घरों में ऊंधे मुंह (मुर्दाह) पड़े थे।

وَعَادًا وَّثَمُوْدَا۟ وَقَدْ تَّبَيَّنَ لَكُمْ مِّنْ مَّسٰكِنِهِمْ ۖ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ وَكَانُوْا مُسْتَبْصِرِيْنَ ۙ﴿٣٨﴾

38. और आ़द और समूदको (भी हमने हलाक किया) और बेशक उनके कुछ (तबाह शुदह) मकानात तुम्हारे लिए (बतौरे इ़ब्रत) ज़ाहिर हो चुके हैं और शैतानने उनके आ'माले बद, उनके लिए ख़ूशनुमा बना दिऐ थे और उन्हें (हकक़ी) राहसे फ़ेर दिया था ह़ालांकि वोह बीना-व-दाना थे।

وَقَارُوْنَ وَفِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ ۖ وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مُّوْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ فَاسْتَكْبَرُوْا فِى الْاَرْضِ وَمَا كَانُوْا سٰبِقِيْنَ ۚ﴿٣٩﴾

39. और (हमने) क़ारून और फ़िरऔ़न और हामानको (भी हलाक किया) और बेशक मूसा (علیہ السلام) उनके पास वाज़ेह़ निशानियां ले कर आए थे तो उन्होंने मुल्क में ग़ूरूरो सरकशी की और वोह (हमारी गिरफ़्त से) आगे बढ़ जानेवाले न थे।

فَكُلًّا اَخَذْنَا بِذَنْۢبِهٖ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ

40. सो हमने (उनमें से) हर एक को उसके गुनाह के

أَرْسَلْنَا عَلَيْهِ حَاصِبًا ۚ وَمِنْهُم مَّنْ
أَخَذَتْهُ الصَّيْحَةُ ۚ وَمِنْهُم مَّنْ
خَسَفْنَا بِهِ الْأَرْضَ ۚ وَمِنْهُم مَّنْ
أَغْرَقْنَا ۚ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَ
لَٰكِن كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٤٠﴾

बाइस पकड लिया, और उन में से वोह (तब्क़ा भी) था जिस पर हमने पथ्थर बरसाने वाली आँधी भेजी और उनमें से वोह (तब्क़ा भी) था जिसे देहशतनाक आवाज़ने आ पकड़ा और उन्में से वोह (तब्क़ा भी) था जिसे हमने ज़मीन में धंसा दिया और उनमें से (एक) वोह (तब्क़ा भी) था जिसे हमने ग़र्क़ कर दिया और हरगिज़ ऐसा न था कि अल्लाह उन पर ज़ुल्म करे बल्कि वोह खूदही अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे।

مَثَلُ الَّذِينَ اتَّخَذُوا مِن دُونِ
اللَّهِ أَوْلِيَاءَ كَمَثَلِ الْعَنكَبُوتِ
اتَّخَذَتْ بَيْتًا ۖ وَإِنَّ أَوْهَنَ
الْبُيُوتِ لَبَيْتُ الْعَنكَبُوتِ ۖ لَوْ
كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٤١﴾ وقف لازم

41. ऐसे (काफिर) लोगों की मिसाल जिन्होंने अल्लाहको छोड़ कर औरों (या'नी बुतों) को कारसाज़ बना लिया है मकड़ी की दास्तान जैसी है जिसने (अपने लिए जाले का) घर बनाया और बेशक सब घरों से ज़ियादह कमज़ोर मकड़ी का घर है। काश ! वोह लोग (येह बात) जानते होते।

إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يَدْعُونَ مِن
دُونِهِ مِن شَيْءٍ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ
الْحَكِيمُ ﴿٤٢﴾

42. बेशक अल्लाह उन (बुतोंकी हक़ीक़त) को जानता है जिनकी भी वोह उसके सिवा पूजा करते हैं, और वोही ग़ालिब है हिक्मतवाला है।

وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ ۖ
وَمَا يَعْقِلُهَا إِلَّا الْعَالِمُونَ ﴿٤٣﴾

43. और येह मिसालें हैं हम उन्हीं लोगों (के समझाने) के लिए बयान करते हैं और उन्हें अह्ले इल्म के सिवा कोई नहीं समझता।

خَلَقَ اللَّهُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ
بِالْحَقِّ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً
لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿٤٤﴾ ع ٤ ١٤ ١٦

44. अल्लाहने आस्मानों और ज़मीनको दुरुस्त तदबीरके साथ पैदा फ़रमाया है, बेशक इस (तख़्लीक़) में अह्ले ईमान के लिए (उसकी वहदानियत और कुदरत की) निशानी है।